ओ३म् ।

संस्कृतप्रबोधः

तत्राथम

द्वितीयो भागः

बदरीदत्त शर्म्मणा

संस्कृतभाषापरिचयेप्सूनाम्

उपकाराय

प्राकृतभाषया विनिर्मितः

The

SANSKRIT PRABODHA

or

A Sanskrit Grammar

PART 2

by

P. Badari Datt Sharma.

B. D. Press Cawnpore.

प्रथमावृत्तौ १०००] १९०६ [मूल्यम् ≡)

मुद्रणाधिकारः स्वायत्तः

संस्कृत प्रबोधे.

द्वितीयो भागः

अथ लिङ्गानुशासनम्

संस्कृत भाषा में तीन लिङ्ग हैं, जिनका निदर्शन प्रथम भाग में करचुके हैं।

अब जो शब्द संस्कृत में नियत लिङ्ग हैं, उनका अनुशासन किया जाता है।

पुंल्लिङ्गाः

जिन शब्दों के अन्त में घञ्, अप्, घ और अच् प्रत्यय हुवे हों वे सब पुंल्लिङ्ग होते हैं॥ यथा—घजन्त—पादः। रोगः। पाकः। रागः। आहारः। अध्यायः। इत्यादि, अबन्त—करः। शरः। यवः। ग्रहः। मदः। निश्चयः। संग्रहः। इत्यादि, घान्त—छदः। घटः। पटः। गोचरः। सञ्चरः। आपणः। इत्यादि, अजन्त—चयः। जयः। अयः। क्षयः। इत्यादि॥

जिन शब्दों के अन्त में 'नङ्' प्रत्यय हुवा हो वे याच्ञाको छोड़कर पुंल्लिङ्ग होते हैं—यज्ञः। यत्नः। विश्नः। प्रश्नः। रक्ष्णः। इत्यादि।

'कि' प्रत्यय जिनके अन्त में हो ऐसे 'घु' संज्ञक शब्द भी पुंलिङ्ग होते हैं—प्रधिः। अन्तर्द्धिः। आधिः। निधिः।

उदधिः। विधिः। इत्यादि। 'इषुधि' शब्द स्त्री पुम् दोनों में है॥

देव, असुर, आत्मन्, स्वर्ग, गिरि, समुद्र, नख, केश, दन्त, स्तन, भुज, कण्ठ, खड्ग, शर और पङ्क ये सब शब्द और इनके पर्याय वाचक भी प्रायः पुंल्लिङ्ग होते हैं॥

नकारान्त शब्द प्रायः पुंल्लिङ्ग होते हैं। यथा-राजन्। तक्षन्। यज्वन्। ब्रह्मन्। वृत्रहन्। अर्यमन्। पूषन्। मघवन्। युवन्। श्वन्। अर्वन्। पथिन्। इत्यादि

क्रतु, पुरुष, कपोल, गुल्फ और मेघ शब्द और इनके पर्यायवाचक भी प्रायः पुंल्लिङ्ग होते हैं, केवल 'अभ्र' मेघ का पर्याय नपुंसक है॥

इकारान्त शब्दोंमें मणि, ऋषि, राशि, दृति, ग्रन्थि, क्रमि, ध्वनि, बलि, कौलि, मौलि, रवि, कवि, कपि, मुनि, सारथि, अतिथि, कुक्षि, वस्ति, पाणि और अङ्गुलि शब्द पुंल्लिङ्ग हैं॥

उकारान्त शब्दों में धेनु, रज्जु, कुहु, सरयु, तनु, रेणु, और प्रियङ्गु इन स्त्रीलिङ्गों को और श्मश्रु, जानु वसु, स्वादु, अश्रु, जतु, त्रपु और तालु इन नपुंसक लिङ्गों, को और मद्गु, मधु, सीधु, शीधु, सानु और कमण्डलु इन पुन्नपुंसक लिङ्गों को छोड़कर शेष सब पुंल्लिङ्ग हैं॥

रु और तु जिनके अन्त में हों ऐसे सब शब्द सिवाय दारु, कसेरु, जतु, वस्तु और मस्तु के [जोकि नियत नपुंसक लिङ्ग हैं] पुंल्लिङ्ग होते हैं। केवल 'सक्तु' शब्द पुन्नपुंसक दोनों में है॥

ककार जिनकी उपधा में हो ऐसे अकारान्त शब्द सिवाय चिबुक, शालूक, प्रातिपदिक, अंशुक और उल्मुक शब्दों के (कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं) पुंल्लिङ्ग होते हैं। परन्तु कण्टक, अनीक, सरक, मोदक, चषक, मस्तक, पुस्तक, तडाक, निष्क, शुष्क, वर्चस्क, पिनाक, भाण्डक, पिण्डक, कटक, शण्डक, पिटक, तालक, फलक और पुलाक ये शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं॥

जकारोपधो में ध्वज, गज, मुञ्ज और पुञ्ज शब्द पुंल्लिङ्ग हैं।

अकारान्त टकारोपध शब्दोंमें सिवाय किरीट, मुकुट, ललाट, वट, वीट, शृङ्गाट, कराट और लोष्ट शब्दोंके (कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं) पुलिङ्ग होते हैं। परन्तु कुट, कूट, कपट, कवाट, कर्पट, नट, निकट, कीट और कट शब्द पुन्नपुंसक दोनों में है।

डकारोपधों में षण्ड, मण्ड, करण्ड, भरण्ड, वरण्ड, तुण्ड, गण्ड, मुण्ड, पाषण्ड और शिखण्ड शब्द पुंल्लिङ्ग हैं॥

णकारोपधों में सिवाय ऋण, लवण, पर्ण, तोरण, रण और उष्ण शब्दोंके (कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं) शेष पुंल्लिङ्ग होते हैं। परन्तु कार्षापण, स्वर्ण, सुवर्ण, व्रण, चरण, वृषण, विषाण, चूर्ण और तृण शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं॥

तकारोपधों में हस्त, कुन्त, अन्त, व्रात, वात, दूत, धूर्त्त, सूत, चूत और मुहूर्त्त, शब्द पुंल्लिङ्ग हैं॥

थकारोपधों में सिवाय काष्ठ, पृष्ठ, सिक्थ और उक्थ शब्दों के (कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं और काष्ठा के कि जो नियत स्त्रीलिङ्ग है) शेष प्रायः पुंल्लिङ्ग

होते हैं । परन्तु तीर्थ, प्रोथ, यूथ और गाथ शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं ॥

दकारोपधों में ह्रद, कन्द, कुन्द, बुद्बुद और शब्द ये पांच पुंलिङ्ग हैं ॥

अकारान्त नकारोपध शब्द सिवाय जघन, अजिन तुहिन, कानन, वन, वृजिन, विपिन, वेतन, शासन, सोपान, मिथुन, श्मशान, रत्न, निम्न और चिन्ह शब्दों के (कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं) पुंलिलङ्ग होते हैं । परन्तु मान, यान, अभिधान, नलिन, पुलिन, उद्यान, शयन, आसन, स्थान, चन्दन, आलान, समान, भवन, वसन, सम्भावन, विभावन और विमान ये शब्द पुन्न-पुंसक दोनों में हैं ॥

पकारोपध शब्दों में सिवाय पाप, सूप, उडुप, तल्प, शिल्प, पुष्प, शष्प, समीप, और अन्तरीप शब्दों के (कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं) प्रायः पुंलिङ्ग होते हैं । परन्तु शूर्प, कुतप, कुणप, द्वीप और विटप ये पांच शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं ॥

भकारोपधों में सिवाय तलभ शब्द के (कि जो नि-यत नपुंसक लिङ्ग है) शेष सब पुलिङ्ग हैं । परन्तु जृम्भ शब्द पुन्नपुंसक दोनों में है ॥

मकारोपध शब्द सिवाय रुक्म, सिध्म, युग्म, इध्म, गुल्म, अध्यात्म और कुङ्कुम शब्दों के (कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं) पुंलिङ्ग होते हैं । परन्तु संग्राम, दा-ड़िम, कुसुम, आश्रम, क्षेम, क्षौम, होम और उद्दाम ये शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं ॥

यकारोपधों में सिवाय किसलय, हृदय, इन्द्रिय और उत्तरीय शब्दोंके (कि जो नियत नपुंसकलिङ्ग हैं) शेष सब पुलिङ्ग होते हैं। परन्तु गोमय, कषाय, मलय, अन्वय और अव्यय शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं॥

अकारान्त रकारोपध शब्द सिवाय द्वार, अग्रस्फार, तक्र, वक्र, वप्र, क्षिप्र, क्षुद्र, नार, तीर, दूर, कृच्छ्र, रन्ध्र, अश्र, श्वभ्र, भीर, गभीर, क्रूर, विचित्र, केयूर, केदार, उदर, अजस्र, शरीर, कन्दर, मन्दार, पञ्जर, अजर, जठर, अजिर, वैर, चामर, पुष्कर, गह्वर, कुहर, कुटीर, कुलीर, चत्वर, काश्मीर, नीर, अम्बर, शिशिर, तन्त्र, यन्त्र, क्षत्र, क्षेत्र, मित्र, कलत्र, चित्र, मूत्र, सूत्र, वक्त्र, नेत्र, गोत्र, अंगुलित्र, भलत्र, शस्त्र, शास्त्र, वस्त्र, पत्र, पात्र और छत्र शब्दों के कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं, शेष पुलिङ्ग हैं। परन्तु चक्र, वज्र, अन्धकार, सार, अवार, पार, क्षीर, तोमर, शृङ्गार, भृङ्गार, मन्दार, उशीर, तिमिर और शिशिर शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं॥

शकारोपधो में वंश, अंश और पुरोडाश ये तीन शब्द पुंल्लिङ्ग हैं॥

षकारोपध शब्द सिवाय शिरीष, शीर्ष, अम्बरीष, पीयूष, पुरीष, किल्बिष, और कल्माष शब्दों के कि जो नियत नपुंसक लिङ्ग हैं, शेष पुलिङ्ग हैं। परन्तु यूष, करीष, मिष, विष और वर्ष शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं

सकारोपध शब्द सिवाय पनस, बिस, बुस और साहस शब्दों के कि जो नियत नपुंसक हैं, शेष पुंल्लिङ्ग हैं

परन्तु चमस, अंस, रस, निर्यास, उपवास, कार्पास, वास, भास, कास, कांस और मांस शब्द पुम्नपुंसक दोनोंमें हैं।

किरण के पर्यायवाचक सिवाय "दीधिति" शब्द के कि जो स्त्रीलिङ्ग है और सब पुंल्लिङ्ग हैं ॥

दिवस के पर्याय सिवाय दिन और अहन् शब्दों के कि जो नपुंसकलिङ्ग हैं और सब पुंल्लिङ्ग होते हैं ॥

मान तौलके पर्याय जितने शब्द हैं वे सब सिवाय द्रोण, और आढ़क के कि जो नपुंसक हैं, पुल्लिङ्ग होते हैं केवल खारी शब्द स्त्रीलिङ्ग है ॥

अर्घ, स्तम्भ, नितम्ब, पूग, पल्लव, पल्वल, कफ, रेफ, कटाह, निर्व्यूह, मठ, तरङ्ग, तुरङ्ग, मृदङ्ग, सङ्ग, गन्ध, स्कन्ध और पुङ्ख ये शब्द भी पुंल्लिङ्ग हैं ॥

अक्षत, दारा, लाजा और सूना ये शब्द पुंल्लिङ्ग और बहुवचनान्त भी हैं ॥

इति पुंल्लिङ्गाः

नपुंसकलिङ्गानि.

भाव अर्थ में जिन शब्दों से ल्युट्, क्त, त्व, और ष्यञ् प्रत्यय होते हैं, वे नपुंसकलिङ्ग होते हैं—

ल्युट्—हसनम्। भवनम्। शयनम्। आसनम्। इत्यादि

क्त—हसितम्। जल्पितम्। शयितम्। आसितम्। भुक्तम्

त्व—ब्राह्मणत्वम्। शुक्लत्वम्। पटुत्वम्। महत्वम्। लघुत्वम्

ष्यञ्—शौक्ल्यम्। दार्ढ्यम्। माधुर्यम्। लावण्यम्। कार्त्स्न्यम्

भाव और कर्म अर्थों में जिन शब्दोंसे ष्यञ्, यत्, य, ढक्, यक्, अञ्, अण्, वुञ् और छ प्रत्यय होते हैं वे सब नपुंसकलिङ्ग होते हैं:--

ष्यञ्—जाड्यम् । मानुष्यम् । आलस्यम् ।
यत्—स्तेयम् । चेयम् । गेयम् । नेयम् ।
य—सख्यम् । दूत्यम् ।
ढक्—कापेयम् । ज्ञातेयम् ।
यक्—आधिपत्यम् । गार्हपत्यम् । राज्यम् । बाल्यम् ।
अञ्—आश्वम् । औष्ट्रम् । सैङ्हम् । कौमारम् । कैशोरम् ।
अण्—यौवनम् । कौशलम् । चापलम् । मौनम् । शौचम् ।
वुञ्—आचार्यकम् । मानोज्ञकम् । बाहुलकम् ।
छ—अच्छावाकीयम् । मैत्रावरुणीयम् ॥

अव्ययीभाव समास भी नपुंसकलिङ्ग होता है । यथा—अधिस्त्रि । उपकुम्भम् । सुमद्रम् । अनुरथम् । अनुरूपम् । प्रत्यर्थम् । यथाबलम् । यावच्छक्ति । बहिर्ग्रामम् । आकुमारम् । अभ्यग्नि । अनुवनम् । अनुगङ्गम् । पञ्चनदम् । इत्यादि ॥

द्वन्द्व और द्विगु समास का एकवचन भी नपुंसक लिङ्ग होता है ।

द्वन्द्व—पाणिपादम् । शिरोग्रीवम् । गवाश्वम् । शीतोष्णम् ।
द्विगु—पञ्चपात्रम् । चतुर्युगम् । त्रिभुवनम् ॥

नञ् समास और कर्मधारय को छोड़कर तत्पुरुष समास भी नपुंसकलिङ्ग होता है । यथा—सुकुमारम् । इक्षुच्छायम् । इनसभम् । रक्षःसभम् । गोशालम् । इत्यादि

इस् और उस् प्रत्यय जिनके अन्तमें हों ऐसे हविस् और धनुस् आदि शब्द प्रायः नपुंसकलिङ्ग होते हैं । परन्तु (अर्चिस्) शब्द स्त्री नपुंसक दोनों में हैं ।

मुख, नयन, लौह, वन, मांस, रुधिर, कार्मुक, विवर, जल, हल, धन और अन्न ये शब्द और इनके पर्याय वाचक भी प्रायः नपुंसकलिङ्ग होतेहैं। परन्तु वक्त्र, नेत्र, अरण्य और गाण्डीव शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं। सीर और ओदन ये केवल पुंल्लिङ्ग में हैं। और अटवी शब्द केवल स्त्रीलिङ्ग में है।

लकार जिनकी उपधा में है ऐसे अकारान्त शब्द सिवाय तूल, उपल, ताल, कुसूल, तरल, कम्बल, देवल और वृषल शब्दों के कि जो नियत पुंल्लिङ्ग हैं, नपुंसक लिङ्ग होते हैं। परन्तु शील, मूल, मङ्गल, साल, कमल, तल, मुसल, कुण्डल, पलल, मृणाल, बाल, निगल, पलाल, बिडाल, खिल और शूल ये शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं।

संख्यावाचक शतादि शब्द भी नपुंसक हैं। यथा—शतम्। सहस्रम्। अयुतम्। लक्षम्। प्रयुतम्। अर्बुदम्। इत्यादि, परन्तु इनमें शत, सहस्र, अयुत और प्रयुत ये चार शब्द कहीं पुंल्लिङ्ग में भी पाये जाते हैं और कोटि शब्द तो नित्य स्त्रीलिङ्ग है।

दो अच् वाले मन् प्रत्ययान्त शब्द कर्तृभिन्न अर्थ में प्रायः नपुंसकलिङ्ग होतेहैं- वर्मन्, चर्मन्, कर्मन्, ब्रह्मन्। इत्यादि, परन्तु ब्रह्मन् शब्द पुंल्लिङ्ग में भी आता है।

दो अच् वाले अस् प्रत्ययान्त शब्द भी प्रायः नपुंसक लिङ्ग होतेहैं- यशस्, पयस्, मनस्, तपस्, वयस्, वासस् इत्यादि, अप्सरस् शब्द स्त्रीलिङ्ग और बहुवचनान्त है।

त्रान्त शब्द प्रायः नपुंसक लिङ्ग होते हैं। यथा- पत्रं, छत्रं; मित्रं, दौहित्रम् इत्यादि। परन्तु यात्रा, मात्रा

भस्त्रा, दंष्ट्रा और वरत्रा ये पांच शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग में ही आते हैं। एवं भृत्र, अमित्र, छात्र, पुत्र, मंत्र, वृत्र, मेढ्र और उष्ट्र ये ८ शब्द सदा पुंल्लिङ्गमें ही आते हैं। तथा पत्र, पात्र, पवित्र, सूत्र और छत्र ये पांच शब्द पुन्न-पुंसक दोनों में आते हैं।

बल, कुसुम, युद्ध और पत्तन ये शब्द और इनके पर्याय वाचक प्रायः नपुंसकलिङ्ग होते हैं। परन्तु पद्म, कमल और उत्पल ये तीन शब्द पुन्नपुंसक दोनों में हैं। आहव और संग्राम ये दो शब्द सदा पुंल्लिङ्ग में ही आते हैं। (आजिः) शब्द सदा स्त्रीलिङ्ग में आता है।

फलजातिवाचक शब्द प्रायः नपुंसकलिङ्ग होते हैं आम्रम्। आमलकम्। दाड़िमम्। नारिकेलम्। इत्यादि।

तकारोपध शब्दों में नवनीत, अवदात, अमृत, अनृत, निमित्त, वित्त, चित्त, पित्त, व्रत, रजत, वृत्त और पलित शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं।

तकारान्तों में विपत्, जगत्, सकृत्, पृषत्, शकृत्, यकृत् और उदश्वित् ये शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं।

श्राद्ध, कुलिश, दैव, पीठ, कुण्ड, अङ्क, अङ्ग, दधि, सक्थि, अक्षि, आस्पद, आकाश, कण्व, बीज, द्वन्द्व, वर्ह-दुःख, बडिश, पिच्छ, बिम्ब, कुटुम्ब, कवच, वर, शर और वृन्दारक ये सब शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं।

यकारोपधों में धान्य, आज्य, आस्य, सस्य, रूप्य, पण्य, वर्ण्य, धृष्य, हव्य, कव्य, काव्य, सत्य, अपत्य, मूल्य, शिक्य, कुड्य, मद्य, हर्म्य, तूर्य और सैन्य ये शब्द भी नपुंसक हैं।

अक्ष शब्द जहां इन्द्रिय का वाचक हो वहां नपुंसक होता है अन्यत्र नहीं॥

इति नपुंसकलिङ्गानि

स्त्रीलिङ्गाः

भावादि अर्थों में जिन शब्दोंसे तल्, क्तिन्, क्यप्, श, अ, अङ् और युच् प्रत्यय होते हैं, वे सब स्त्रीलिङ्ग होते हैं। यथाः—

तल्—मनुष्यता। पटुता। शुक्लता। जनता। देवता।
क्तिन्—कृतिः। मतिः। गतिः। श्रुतिः। स्तुतिः। इष्टिः। वृष्टिः
क्यप्—संपत्। विपत्। प्रतिपत्। वृज्या। इज्या।
श—क्रिया। इच्छा। परिचर्या। मृगया।
अ—चिकीर्षा। जिहीर्षा। समीक्षा। परीक्षा। ईहा। ऊहा।
अङ्—जरा। त्रपा। श्रद्धा। मेधा। पूजा। कथा। चर्चा।
युच्—कारणा। हारणा। आसना। वन्दना। वेदना॥

ऊङ् और आप् प्रत्यय जिनके अन्तमें हों, ऐसे सब शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं:—

ऊङन्त—कुरू। पङ्गू। श्वश्रू। वामोरू। करभोरू। कद्रू।
आबन्त—अजा। कोकिला। अश्वा। खट्वा। दया। रमा।

दीर्घ ईकारान्त और दीर्घ ऊकारान्त शब्द भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं:—

ईकारान्त—कर्त्री। हर्त्री। प्राची। शर्वरी। गार्गी। लक्ष्मी।
ऊकारान्त—चमू। वधू। यवागू। कर्षू॥

अनि प्रत्ययान्त उणादि शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होतेहैं— अवनिः। तरणिः। सरणिः। धमनिः। परन्तु अशनि, भरणि और अरणि ये तीन शब्द पुंलिङ्ग में भी आते हैं॥

मि और नि प्रत्ययान्त उणादि शब्द भी प्रायः स्त्री-लिङ्ग होते हैं—भूमिः। ग्लानिः। हानिः। इत्यादि, परन्तु वह्नि, वृष्णि, और अग्नि ये तीन शब्द सदा पुंल्लिङ्ग में ही आते हैं। तथा श्रोणि, योनि और ऊर्मि ये तीन शब्द स्त्रीपुम् दोनों में आते हैं॥

ऋकारान्त शब्दों में मातृ, दुहितृ, स्वसृ, पोतृ और ननान्दृ ये पांच शब्द और दो संख्यावाचकों में तिसृ और चतसृ कुल मिलाकर सात शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं॥

विंशति, त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति, अशीति और नवति ये संख्या वाचक शब्द भी स्त्रीलिङ्ग हैं

भूमि, विद्युत, सरित्, लता, और वनिता ये शब्द और इनके पर्याय भी प्रायः स्त्रीलिङ्ग होतेहैं, परन्तु 'यादः' शब्द नदीवाचक भी नपुंसक लिङ्ग है॥

भाः, स्रुक्, स्रग्, दिग्, उष्णिग्, उपानत्, प्रावृट्, विप्रट्, रुट्, तृट्, विट् और त्विष् ये सब शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं॥

स्थूणा और ऊर्णा शब्द स्त्रीलिङ्ग के अतिरिक्त नपुंसकलिङ्ग में भी आते हैं, वहां इनका रूप स्थूणम् और ऊर्णम् होता है॥

दुन्दुभि और नाभि शब्द यदि क्रमशः वाद्यविशेष और जातिविशेष के वाचक न हों तो स्त्रीलिङ्ग होतेहैं, अन्यथा पुंल्लिङ्ग॥

ह्रस्व इकारान्तोंमें दर्वि, विदि, वेदि, खानि, शानि, असि, वेशि, कृष्णौषधि, कटि, अङ्गुलि, तिथि, नाडि, रुचि, वीचि, नालि, धूलि, केलि, छवि, रात्रि, शष्कुलि,

राजि, अनि, वर्त्ति, भ्रुकुटि, त्रुटि, वलि और पङ्क्ति शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं।

तकारान्तों में प्रतिपत्, आपत्, विपत्, सम्पत्, शरत्, संसत्, परिषत्, संवित्, क्षुत्, पुत्, मुत्, और समित् शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं॥

ककारान्तों में स्रुक्, त्वक्, ज्योक्, वाक्, और स्फिक् ये शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं॥

आशीः, धूः, पूः, गीः, द्वाः और नौ ये शब्द भी स्त्रीलिङ्ग हैं। उषा, तारा, धारा, ज्योत्स्ना, तमिस्रा और शलाका शब्द भी स्त्रीलिङ्ग हैं।

अप्, सुमनस्, समा, सिकता और वर्षा ये शब्द स्त्रीलिङ्ग और बहुवचनान्त भी हैं।

इति स्त्रीलिङ्गाः

अवशिष्टलिङ्गानि।

षकारान्त और नकारान्त संख्या तथा युष्मद्, अस्मद् और कति शब्द अव्ययवत् होते हैं अर्थात् इनका कोई नियत लिङ्ग नहीं होता, किन्तु ये तीनों लिङ्गों में एकही रूप से आते हैं। यथाः—

षकारान्त संख्या—षट् भ्रातरः। षट् स्वसारः। षट् मित्राणि

नकारान्त संख्या—पञ्चाश्वाः। सप्तधेनवः। दशपुस्तकानि

युष्मद्—त्वं पुमान्। त्वं स्त्री। त्वं नपुंसकम्॥

अस्मद्—अहं पुमान्। अहं स्त्री। अहं नपुंसकम्॥

कति—कति पुत्राः। कति दुहितरः। कति मित्राणि॥

इनके अतिरिक्त और सर्वनामों का लिङ्ग परवत्

होता है, अर्थात् पर शब्द का जो लिङ्ग होता है वही पूर्व का भी होता है।

यथा—एकः पुरुषः। एका स्त्री। एकं कुलम्॥

द्वन्द्व और तत्पुरुष समासमें भी परवल्लिङ्ग होताहै

द्वन्द्व—स्त्रीपुरुषौ। कुक्कुटमयूर्यौ। गुणकुले॥

तत्पुरुष—विद्यानिधिः। आर्यसभा। ब्राह्मणकुलम्॥

गुणवाचक विशेषण का लिङ्ग वही होताहै जो विशेष्यका। यथा—शुक्ला शाटी। शुक्लः पटः। शुक्लं वस्त्रम्

इति लिङ्गानुशासनम्

—:o:—

अथाव्ययानि।

संस्कृतभाषामें संज्ञा और क्रियाके अतिरिक्त कुछ शब्द ऐसे भी हैं कि जिनके स्वरूप में कभी कोई विकार या परिवर्त्तन नहीं होता, उन को अव्यय कहते हैं।

अव्यय का लक्षण यह है कि "सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्" जो तीनों लिङ्ग सातों विभक्ति और उनके सब वचनों में एक से बने रहें अर्थात् जिनके स्वरूप में कभी कोई विकार न हो, वे अव्यय कहलाते हैं।

अव्ययों के छः विभाग हैं (१) स्वरादिगणपठित (२) अद्रव्यार्थक निपात (३) उपसर्ग (४) तद्धितान्त (५) कृदन्त (६) अव्ययीभाव समास।

अब हम क्रमशः अर्थ और उदाहरण सहित इन छहों प्रकार के अव्ययों का निरूपण करते हैं।

१—स्वरादिगणपठित।

स्वरादिगण के अन्तर्गत जितने शब्द हैं वे सब इसमें समझने चाहियें, उनके रूप, अर्थ और उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं।

अव्ययानि	अर्थाः	उदाहरणानि
स्वः	स्वर्ग	सुकृतिनः स्वर्गमिष्यन्ति
अन्तः	भीतर	चक्षोरन्तः प्रविशन्ति मशकाः
अन्तरे, अन्तरा		धनुषोन्तरेऽन्तरा वा शरः सन्धीयते
प्रातः	प्रभात	किन्त्वया प्रातः सन्ध्योपासिता?
भूयः	फिर	भूयोऽपि मां स्मरिष्यसि
पुनः		पुनरेष्यत्यध्ययनार्थं माणवकः
उच्चैः	ऊंचेसे	उच्चैर्गायन्ति गायकाः
नीचैः	नीचेसे	नीचैर्न पठन्ति बालकाः
शनैः	धीरेसे	शनैर्गमनं शोभनम्
आरात्	दूर	आराच्छत्रोः सदा वसेत्
”	समीप	सखायं स्थापयेदारात्
ऋते	छोड़कर	ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
अन्तरेण		त्वामन्तरेण तत्र न गच्छामि
विना		न विद्यया विना सौख्यम्
सकृत्	एकबार	सकृत् प्रतिज्ञा क्रियते
युगपत्		युगपद्गच्छन्ति सैनिकाः
असकृत्	बारबार	छात्रैः सूत्राणामसकृदावृत्तिः क्रियते
अभीक्ष्णम्		उद्योगिनः कार्यसिद्धयेऽभीक्ष्णं यतन्ते
मुहुः		स्खलन्नपि शिशुः मुहुर्धावते
पृथक्	अलग	कृषकाः बुसं पृथक्कृत्यान्नं रक्षन्ति
सहसा	अकस्मात्	सहसा विदधीत न क्रियाम्
सपदि		सपदि मांसं पतन्ति क्रव्यादाः

अव्ययानि	अर्थाः	उदाहरणानि
कर्हिचित्	कभी	न कर्हिचित् क्वापि कृतस्य हानिः
कदाचित्		न कदाचिदनीश्वरं जगत्
सत्वरम्	शीघ्र	श्रुत्वैव वाक्यं महि सत्वरं गतः
आशु		तदाशुकृतसन्धानंप्रतिसंहरसायकम्
झटिति		वृक्षं झटित्यारुरोह
चिरम्	विलम्ब	चिरं सुखं प्रार्थयते सदा जनः
चिरेण		चिरेणागतोऽस्मि
चिरात्		चिराद् दृष्टोऽसि
प्रसह्य	हठसे	धृष्टः वर्ज्जितोऽपि प्रसह्य भाषते
हठात्		हठादाकृष्टानांकतिपयपदानांरचयिता
साक्षात्	प्रत्यक्ष	साक्षाद् दृष्टो मया हि सः
"	तुल्य	साक्षाल्लक्ष्मीरियं वधूः
पुरः	आगे	कस्यापि पुरो दीनं वचः मा ब्रूहि
ह्यः	गतदिन	ह्यः सखा मे समागच्छत्
श्वः	आगामिदिन	श्वो गन्तास्मि तवान्तिकम्
दिवा	दिनमें	दिवा मा स्वाप्सीः
दोषा	रातमें	दोषा तमसाच्छाद्यते जगत्
नक्तम्		नक्तं जाग्रति चौराः कामिनो वा
सायम्	सूर्यास्तकाल	सायं सूर्योऽस्तं गच्छति
मनाक्	थोड़ा	मितभाषिणो मनाक् भाषन्ते
ईषत्		अकरणादीषत्करणं वरम्
स्वल्पम्		स्वल्पमप्यस्यधर्मस्यत्रायतेमहतोभयात्
तूष्णीम्	चुप	विवादे सति तूष्णीं तिष्ठन्ति सज्जनाः
जोषम्		जोषमालम्बते मुनिः
बहिः	बाहर	गृहाद्बहिर्गतो विरक्तः
आविः	प्रकट	विदुषा सूक्ष्मोऽप्यर्थ आविष्क्रियते
प्रादुः		प्रादुर्भवति काले कर्मणां विपाकः

अव्ययानि	अर्थाः	उदाहरणानि
अधः	(नीचे)	उत्पथगामिनामधः पतनं भवति
स्वयम्	(आप)	सदाचारस्सर्वैः स्वयमेवानुष्ठेयः
विहायसा	(आकाशमें)	विहायसा उड्डयन्ते पक्षिणः
सम्प्रति	(अब)	अध्ययनंतु कृतं सम्प्रति व्यायामः क्रियते
नाम	(प्रसिद्धि)	हिमालयो नाम नगाधिराजः
नञ्	(नहीं)	कस्याप्यनिष्टं न चिन्तनीयम्
वत्	(तुल्य)	वकवद्र्थान् चिन्तय
सततम्		वृद्धेषु सततं विनयो विधेयः
अनिशम्		सदा धर्मएवानिशं सेव्यइहकल्याणमीप्सुभिः
सनातनः		सकलकायाःसृष्टेस्तुप्रवाहोऽयंसनातनः
तिरः	(तिरस्कार)	तिरस्क्रियन्ते हितवचनानि दुर्मेधसैः
कम्	(जल)	पर्वतेषु निर्झरेभ्यः कं निस्सरति
शम्	(सुख)	शंकरः शं विधास्यति
नाना	(अनेक)	रुचिभेदान्नाना मतानि जायन्ते
स्वस्ति	कल्याण-आशीर्वाद	प्रजाभ्यःस्वस्ति।स्वस्तितेभूयात्
स्वधा	(कव्य)	पितृभ्यः स्वधा
अलम्	(भूषण)	विद्ययात्मानमलंकुरुत
„	पर्याप्ति	कथापि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः
„	वारण	अलं महीपाल ! तव श्रमेण
अन्यत्	(और)	मित्रादन्यत्पातुं कः समर्थः
वृथा	निष्फल	वृथा कृपणस्य संपत्
मुधा		मुधैवाऽसमीक्ष्यकारिणां प्रयासः
मृषा	झूठ	मृषा वदति वञ्चकः
मिथ्या		मिथ्यावादिनि न कोऽपि विश्वसिति
प्राक्	पहिले	नद्यां प्रवाहात्प्रागेव सेतुर्विधेयः
पुरा		पुरा कश्चिज्ज्ञामदग्न्यो बभूव

अव्ययानि	अर्थाः	उदाहरणानि
मिथो, मिथस्	(परस्पर)	विवदन्ते मिथो मिथस् वा वैयाकरणाः
साकम्	(साथ)	केनापि साकं विवादो न कार्यः
सार्द्धम्	(साथ)	मया सार्द्धं तत्र गन्तव्यम्
समम्	(साथ)	शत्रुणापि समं औदार्यमेवावलम्बनीयम्
सत्रा	(साथ)	सदा सदाचारेण सत्रा स्यातव्यम्
अमा	(साथ)	राजाऽमात्येनामा मन्त्रं निश्चिनोति
प्रायः	(बहुधा)	उत्पथगामिनः प्रायश्चापदं लभन्ते
नमः	(नमस्कार)	गुरवे नमः
नितान्तम्	(अत्यन्त)	शिष्यैः गुरवो नितान्तं सेवनीयाः
भृशम्	(अत्यन्त)	व्याधिना भृशं पीडितोऽसि
ऊरी	स्वीकार	यत्तेनोक्तं तदूरीकृतं मया
उररी	स्वीकार	अपराधिना स्वापराधो नोररीक्रियते

नोट—एक २ अव्यय के अनेक अर्थ होते हैं परन्तु यहां हमने संक्षेप के लिये प्रसिद्ध २ अर्थ और उनके उदाहरण दिये हैं। अन्य अर्थ और उनके उदाहरण संस्कृतव्याकरण का अवगाहन करने से मिलेंगे।

२—अद्रव्यार्थकनिपाताः।

जो किसी द्रव्य के वाचक न हों, ऐसे निपातों की भी अव्यय संज्ञा है, जिनके रूप, अर्थ और उदाहरण नीचे लिखे जाते हैं।

निपाताः	अर्थाः	उदाहरणानि
च	और	सदुपदेशं शृणु सद्व्यवहारं च कुरु
,,	भी	पितरं मातरञ्च सेवस्व
वा	या	व्याकरणमध्येषि वा ज्योतिषम्
ह	अवश्य	तेन ह विचित्ररचनेयं कृता

निपाताः	अर्थाः	उदाहरणानि
वै	(निश्चय)	यस्माद्वै स्वर्गो जायते
हि		यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ!
तु	(अवधारण)	यस्तु विद्याक्रियायुक्तः
एव		सएव बलवान्नरः
अ	(अभाव)	अविद्वानिव भाषसे
आ	(वाक्य, स्मरण)	आ एवं किल तत्। आ एवं नु मन्यसे
आः	(क्रोध, दुःख)	आः कथमिदं सञ्जातम्। आः पाप! किं विकत्थसे?
हु	(अपाकरण)	हु इतः यातु दुर्जनः
उ	(रोषोक्ति)	उ उत्तिष्ठ नराधम!
ओ३म्	(प्रणव)	तत्ते पदं सङ्ग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्
"	(अङ्गीकार)	शिष्यः गुरूपदेशं ओमित्युक्त्वा स्वीकरोति
कु	(पाप)	कुकर्म नाचरणीयम्
"	(कुत्सा)	कुमित्रे नास्ति विश्वासः
"	(ईषदर्थ)	कवोष्णमुपभुज्यते
किम्	(प्रश्न, निन्दा)	किन्ते करवाणि? किं राजा यो न रक्षति?
अस्तु	(स्वीकार)	एवमस्तु यत्त्वयोक्तम्
अहोबत	(दया, खेद)	अहोबत!! महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्
अहह	आश्चर्य	अहह! बुद्धिप्रकर्षः पाश्चात्यानाम्
अहो		अहो! बलं सिंहस्य
नूनम्	निश्चय	नूनं हि ते कविवरा विपरीतबोधाः
खलु	वाक्यालङ्कार	धन्यास्त एव ये खलु परार्थमुद्यताः
किल	सम्भावना	जघान द्रोणं किल द्रौपदेयः
इति	प्रकार, समाप्ति	इत्याह पाणिनिः। इत्यष्टमोऽध्यायः।
एवम्	ऐसा	एवं मा कुरु

निपाताः	अर्थाः	उदाहरणानि
शश्वत्	निरन्तर	शश्वत् धर्म एव सेवनीयः
चेत्	यदि	व्रीडा चेत् किम् भूषणैः
कामम्	यथेच्छ	कामं वृष्टिर्भविष्यति
कच्चित्	क्या	कच्चित् गुरून् सेवसे ?
किञ्चिद्	कुछ	किञ्चिद्भोज्यमवशिष्टम् ?
नहि	नहीं	नहि सत्यात्परो धर्मः
न		नानृतात्पातकं परम्
नो		नो जानीमः किमत्रास्ति
हन्त	दुःख	हन्त ! व्याधिना पीडितोऽसि
बत		बत ! शत्रुभिराक्रान्तोऽसि
हा		हा ! निधनता त्वया जर्जरीकृतोऽस्मि
मा	मत	पापे रतिं माकृथाः
यावत्	जबतक-जितना	यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्
तावत्	तबतक-उतना	तावदध्येयं यावदायुः
स्वाहा	हव्यदान	अग्नये स्वाहा
अथ	अब	अथ शब्दानुशासनम्
सु, सुष्ठु	अच्छा	सुभाषितम् । सुष्ठुपठितम्
स्म	भूतकाल	यजतिस्म युधिष्ठिरः
अङ्ग, हे, भो	सम्बोधन	अङ्ग सुशर्मन् ! हे शिष्य ! भो गुरो !
ननु	आक्षेप	नन्वेवं कथमुच्यते
नु	सन्देह	कोनु धर्मः सेवनीयः
इव	तुल्य	भीरुरिव कथं वेपसे
वत्		विषमे शूरवत् स्थातव्यम्
यथा, तथा	जैसे- तैसे	यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि
ऋतम्	सत्य	ऋतम्बर

निपाताः	अर्थाः	उदाहरणानि
नोचेत्	नहीं तौ	हे शिष्य ! विद्यामर्जय नोचेत्तप्स्यसि
जातु	कभी	नहिकश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्
कथम्	क्योंकर	वृथा विना कथं निर्वाहो भविष्यति
स्वित्	प्रश्न	किं स्वित् कुशलमस्ति ?
"	वितर्क	मोदकं रोचसे स्वित् पायसम् ।
आहोस्वित्	अथवा	त्वयाव्याकरणमधीतमाहोस्विच्छन्दः
उत	विकल्प	त्वं तत्रैकाकी वसस्युत सकलत्रम्
दिष्ट्या	दैवयोगसे	दिष्ट्या कुशली भवान्
सह	साथ	दुर्जनैः सह वासो न कार्यः
अयि	नीच	अयि दुर्विनीते ! भर्तारमुल्लङ्घयसि
अरे,रे	सम्बोधन	रे वा अरे मूढ़? गुरुवाक्यं नाद्रियते ।
धिक्	निन्दा	विश्रब्धे यः पापं समाचरति तं धिक् ।
"	निर्भर्त्सन	धिक् त्वामपराधिनम् ।

नोट—एक २ निपात के भी कई २ अर्थ होतेहैं. संक्षेप के लिये हमने इनके भी प्रसिद्ध २ अर्थ और उनके उदाहरणों पर ही सन्तोष किया है ।

३—उपसर्गाः

निम्नलिखित २२ उपसर्ग भी अव्यय कहलाते हैं "उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते" इन्हीं उपसर्गोंके योग से धातु का अर्थ कुछ का कुछ होजाता है. इनके भी एक २ के अनेक अर्थ हैं, परन्तु हम संक्षेपसे प्रसिद्ध २ अर्थ और उनके क्रमशः उदाहरण दिखलाते हैं:—

उपसर्गाः	अर्थाः	उदाहरणानि
प्र	प्रकर्ष,गमन	प्रभावः । प्रस्थानम्

उपसर्गाः	अर्थाः	उदाहरणानि
परा	उत्कर्ष,अवकर्ष	पराक्रमः । पराभवः ।
अप	हरण,अपकर्ष,वर्जन, निर्देश और विकार	अपहरणम्। अपवादः । अपेतः अपदेशः । अपकारः ।
सम्	शोभन,सङ्ग, सुधार	सम्भाषणम् । सङ्गमम् । संस्कारः
अनु	लक्षण,योग्यता,पश्चात् तुल्यता और क्रम	अनुगङ्गम्।अनुरूपम्।अन्वर्जुनम् अनुकरणम् । अनुज्येष्ठम् ॥
अव	प्रतिबन्ध,निन्दा,स्वच्छता	अवरोधः।अवज्ञा।अवदातः
निस्,निर्	निश्चय और निषेध	निर्णयः । निष्क्रान्तः ॥
दुस्,दुर्	निन्दा और विषमता	दुर्जनः । दुरूहः ॥
वि	श्रेष्ठ,अद्भुत,अतीत	विशेषः । विचित्रः । विगतः
आ	व्याप्ति,अवधि,ईषदर्थ	आजन्म।आसमुद्रम्।आपिङ्गलः
नि	निन्दा,बन्धन,स्वभाव, उपरम, राशि, कौशल और सामीप्य	निकृष्टः । नियमः । निसर्गः। निवृत्तिः। निकरः।निष्णातः । निकटः ।
अधि	आधार,ऐश्वर्य,	अधिकरणम्। अधिराजः ।
अपि	सम्भावना,शङ्का, निन्दा, आज्ञा और प्रश्न	प्रेत्यापि जायते।किमपि न ज्ञायते। तेनापि शाठ्यं कृतम् । त्वमपि- तत्र गच्छेः। किमपिजानासि ?
अति	प्रकर्ष,उल्लङ्घन, अत्यन्त और पूजन	अत्युत्तमः । अतिक्रान्तः । अतिवृष्टिः । अत्यादृतः ॥
सु	पूजा	सुजनः ॥
उद्	उत्कर्ष,प्रकाश,शक्ति, निन्दा,स्वैरिता,उत्प- त्ति और उन्नति	उत्तमः। उद्भूतः । उत्साहः । उत्पथः। उच्छृङ्खलः।उत्पन्नः । उद्गतः ॥

उपसर्गाः	अर्थाः	उदाहरणानि
अभि	लक्षण, आभिमुख्य, कुटिलता	वृक्षमभि । अभ्यग्नि । अभिचारः ।
प्रति	भाग, प्रतिनिधि, पुनर्दान, लक्षण और खण्डन	किञ्चिन्मांप्रति । कृष्णःपाण्डवेभ्यःप्रति । तिलेभ्यः प्रति माषान् देहि । वृक्षंप्रति।प्रत्याख्यानम्
परि	व्याधि, परिणाम, आलिङ्गन, शोक पूजा, निन्दा और भूषण	परितापः। परिणतिः। परिष्वङ्गः। परिदेवनम् । परिचर्या । परिवादः । परिष्कारः ।
उप	सामीप्य, सादृश्य, गुणाधान, संयोग, पूजा, वृद्धि, आरम्भ, दान, शिक्षा, निन्दा और विश्राम	उपगृहम्। उपमानम् । उपस्कारः। उपसृष्टः । उपचारः। उपचयः । उपक्रमः। उपहारः । उपदेशः। उपालम्भः । उपरतः।

४—तद्धितान्ताः ।

जिनसे तसिल् आदि अविभक्तिक तद्धित प्रत्यय उत्पन्न होते हैं वे तद्धितान्त भी अव्यय कहलाते हैं ।

तद्धिताः	अर्थाः	उदाहरणानि
अतः	इसलिये	अतोऽहं ब्रवीमि
इतः	यहां से	इतः स गतः
यतः	जहां से	यतस्त्व मागतोऽसि
ततः	वहां से	ततोऽहमप्यागच्छामि
कुतः	कहां से	कुतस्त्वं प्रत्यावृत्तः
परितः	चारों ओर से	अरण्ये परितः द्रुमाएव दृश्यन्ते
अभितः	चारों ओर से	युद्धेऽभितः शूराणां गर्जनं श्रूयते

तद्धिताः	अर्थाः	उदाहरणानि
सर्वतः	सब ओर से	समुद्रे सर्वतआपः प्लवन्ते
उभयतः	दोनोंओरसे	शास्त्रार्थे उभयतः प्रमाणानि दीयन्ते
आदितः	आरम्भ से	आदितएव पुस्तकमवलोकनीयम्
अग्रतः	आगे से	न गजस्याग्रतो गच्छेत्
पार्श्वतः	पीछे से	त्वंतत्रगच्छपार्श्वतअहमप्यागच्छामि
बहुशः	बहुतायत से	कृपणःबहुशः प्रार्थितोऽपि नददाति
प्रायशः		प्रायशोजनाः लोकाचारमाश्रयन्ति
अल्पशः	न्यूनता से	गृहस्थेन अल्पश एव व्ययःकार्यः
क्रमशः	क्रम से	जलविन्दुनिपातेनक्रमशःपूर्यतेघटः
अत्र,इह	यहांपर	स अद्याप्यत्र इह वा नागतः
यत्र	जहांपर	यत्र देशे द्रुमो नास्ति
तत्र	वहांपर	तत्रैरण्डो द्रुमायते
कुत्र, क्व	कहांपर	तत्र गत्वा कुत्र क्व वा वत्स्यसि
सर्वत्र	सबजगहपर	विद्वान् सर्वत्र पूज्यते
एकत्र	एकजगहपर	मूर्खाः कूपमण्डूकवदेकत्रैवावसीदन्ति
बहुत्र	बहुतजगहोंपर	विद्वांसस्तु मधुपवद्बहुत्ररमन्ते ।
यर्हि,यदा	जब	यदा यर्हिवा त्वामाज्ञापयिष्यामि
तर्हि,तदा, तदानीम्	तब	तदा, तर्हि, तदानीं वा त्वया तत्र गन्तव्यम्
कर्हि,कदा	कब	कदा,कर्हि वा त्वमत्रागमिष्यसि?
एतर्हि,अधुना, इदानीम्	अब	अधुना,इदानीं एतर्हि वाऽऽगच्छामि
सदा,सर्वदा	सबसमयमें	त्वया,सदा,सर्वदा धर्मेस्थातव्यम्
एकदा	एकसमयमें	एकदाऋषयस्सर्वेनैमिषारण्यमास्थिताः

तद्धिताः	अर्थाः	उदाहरणानि
अन्यदा	औरसमयमें	अन्यदाभूषणंपुंसांक्षमालज्जेवयोषितः
यथा-तथा-	जैसे तैसे	यथाज्ञापयन्ति गुरवस्तथैवानुष्ठेयम्
सर्वथा	सब प्रकार से	व्यसनानि सर्वथा परिवर्ज्जनीयानि
अन्यथा	झूंठ	अन्यथा वदन्ति साक्षिणः लोभाविष्टा
इतरथा	और प्रकारसे	लोकाचारादितरथाहिशास्त्रस्यगतिः
कथम्	कैसे	धर्मेण विना कथं श्रेयः स्यात् ?
इत्थम्	ऐसे	इत्थं तेनाभिहितम्
समन्तात्	सबओरसे	समन्ताद्वाति मारुतः
पुरस्तात्	आगे से	पुरस्ताद्वायुरागच्छति
अधस्तात्	नीचे से	अधस्ताज्जलमानय
उपरिष्टात्	ऊपर से	उपरिष्टात् फलं पतति
पश्चात्	पीछे से	त्वयैवाहं तत्र पश्चाद्गमिष्यामि
एकधा	एकप्रकारसे	एकधैव सर्वत्र सतां व्यवहारः
द्विधा, द्वेधा	दोप्रकारसे	द्विधा, द्वेधा वा कर्मणां गतिः
त्रिधा, त्रेधा	तीनप्रकारसे	त्रिधा, त्रेधा वा प्रकृतेर्गुणाः
चतुर्धा	चारप्रकारसे	एकामनुष्यजातिः गुणकर्मभेदेनचतुर्धा
पञ्चधा	पांचप्रकारसे	पञ्चधा भूतानि
बहुधा	बहुतप्रकारसे	बहुधा कर्मणां गतिः
अद्य	आज	अद्य शीतं वरीवर्त्ति सरीसर्त्ति समीरणः
सद्यः	तत्काल	प्रभोरादेशमवाप्य सद्यस्तत्र गमनीयम्
पूर्वेद्युः	बीतीहुईकलह	पूर्वेद्युरहमिन्द्रप्रस्थ आसम्
उत्तरेद्युः	आनेवालीकलह	किमुत्तरेद्युस्त्वंमुघनं गमिष्यसि
अपरेद्युः, अन्येद्युः	और दिन	अपरेद्युस्तत्र गमिष्यामि
उभयेद्युः	दोनोंदिन	उभयेद्युरौषधिः पीता

५—कृदन्ताः।

इन के अतिरिक्त मकारान्त, एजन्त और 'क्त्वा' प्रत्ययान्त कृदन्त भी अव्यय संज्ञक होते हैं।

कृदन्ताः	अर्थाः	उदाहरणानि
स्मारंस्मारम्	बारबारस्मरणकरके	स्मारंस्मारं पाठमधीते
यावज्जीवम्	जीवनपर्यन्त	यावज्जीवंसत्यमालम्बनीयम्
भोक्तुम्	खानेको	स तत्र भोक्तुं व्रजति
गन्तवे	जाने के लिये	स्वर्देवेषु गन्तवे
सूतवे	जनने के लिये	दशमे मासि सूतवे
दृशे	देखने के लिये	दृशे विश्वाय सूर्यम्
गत्वा	जाकर	तत्र गत्वा स्वकार्यं साधनीयम्

६—अव्ययीभावः।

अव्ययीभाव समास की भी अव्यय संज्ञा है। यथा- अभ्यग्नि। उपगृहम्। अनुरूपम् इत्यादि॥

इत्यव्ययानि।

—:o:—

अथ स्त्रीप्रत्ययाः।

अब जिन प्रत्ययों के योग से पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग बनाये जाते हैं, उनका वर्णन करते हैं॥

प्रायः अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग में 'आ' प्रत्ययान्त होजाते हैं—प्रिया। कान्ता। वृद्धा। कृशा। दीना। अबला। सरला। चपला। निपुणा। कृपणा। चतुरा। पूर्वा। पश्चिमा। उत्तरा। दक्षिणा। प्रथमा।

द्वितीया। तृतीया। मनोहरा। अनुकूला। प्रतिकूला॥ इत्यादि, परन्तु ककार जिनकी उपधामें हो ऐसे अकारान्त शब्दों के ककार से पूर्व वर्ण को स्त्रीलिङ्ग में ह्रस्व 'इ' आदेश और होजाता है। जैसे—कारकसे कारिका। वाचक से वाचिका। नायक से नायिका॥ इत्यादि।

किन्हीं २ अकारान्त शब्दोंसे स्त्रीलिङ्गमें 'ई' प्रत्यय और उनके अकार का लोप भी होताहै। यथा—गौरी। नदी। काली। नागी। कबरी। बदरी। तटी। नटी। कुमारी। किशोरी। तरुणी। पितामही।मातामही॥इत्यादि

जातिवाचक अकारान्त शब्दों में सिवाय अजा, कोकिला, चटका, क्रुञ्चा, अश्वा, मूषिका,बलाका,मक्षिका, पुत्तिका, वर्त्तिका, बाला, वत्सा, मन्दा, ज्येष्ठा, कनिष्ठा और शूद्रा शब्दों के कि (जो स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त हुवेहैं) शेष सब 'ई' प्रत्ययान्त होते हैं। जैसे—सिंही। व्याघ्री। मृगी। एणी। हरिणी। कुरङ्गी। हंसी। वकी। काकी। मानुषी। गोपी। राक्षसी। पिशाची॥ इत्यादि

ऋकारान्त शब्दों में स्वसृ, मातृ, दुहितृ, यातृ, ननान्दृ, तिसृ और चतसृ शब्दों को छोड़कर शेष सब स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्ययान्त होतेहैं। यथा—कर्त्री। भर्त्री। धात्री। दात्री। गन्त्री। हन्त्री। अधिष्ठात्री। उपदेष्ट्री। जनयित्री। प्रसवित्री॥ इत्यादि

नकारान्त शब्दों में पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन् और दशन् इन संख्यावाचक शब्दों को छोड़कर शेष सब स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त होते हैं—दण्डिनी। हस्तिनी। यामिनी। भामिनी। कामिनी। मानिनी। विला-

सिनी । तपस्विनी । मायाविनी । मेधाविनी । प्रियवादिनी । मनोहारिणी ॥ इत्यादि

वन् प्रत्ययान्त शब्द भी स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त होते हैं और अन्तके नकार को रकार आदेश भी होता है । यथा—धीवन् से धीवरी । पीवन् से पीवरी । शर्वन् से शर्वरी ॥ इत्यादि

मन् प्रत्ययान्त शब्द तथा बहुव्रीहिसमास में अन् प्रत्ययान्त शब्द भी स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त होते हैं ।

मन्नन्त-सीमन्‌सेसीमा । दामन्‌सेदामा । पामन्‌सेपामा

अन्नन्त ब० व्री०—सुपर्वन् से सुपर्वा । सुशर्मन् से सुशर्मा॥

मत्, वत्, तवत्, वस् और ईयस् ये प्रत्यय जिनके अन्तमें हुवे हों ऐसे शब्दों से स्त्रीलिङ्गमें (ई) प्रत्यय होता है—बुद्धिमत् से बुद्धिमती । लज्जावत् से लज्जावती । दृष्टवत् से दृष्टवती । विद्वस् से विदुषी । प्रेयस्‌से प्रेयसी ॥

शतृ प्रत्ययान्त शब्द भी स्त्रीलिङ्गमें ईकारान्त होते हैं और उनको 'नुम्' का आगम भी होजाता है- भवत् से भवन्ती । पचत् से पचन्ती । ददत् से ददन्ती । यजत् से यजन्ती इत्यादि ॥

अञ्चु धातु से जो संज्ञाशब्द बनते हैं, वे भी स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त होजाते हैं- प्राक् से प्राची । प्रत्यक् से प्रतीची । उदक् से उदीची ॥

टित्, ढ, अण्, अञ्, द्वयसच्, दघ्नच्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठञ्, कञ्, क्वरप्, नञ् और स्नञ् ये प्रत्यय जिनके अन्तमें हुवे हों वे सब शब्द स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त होते हैं—

टित्—कुरुचरसे कुरुचरी। ढान्त—वैनतेयसे वैनतेयी। अणन्त—औपगवसे औपगवी। अञन्त—औत्सस्से औत्सी। द्वयसजन्त—ऊरुद्वयस से ऊरुद्वयसी। दघ्नजन्त—जानुदघ्न से जानुदघ्नी। मात्रजन्त—कटिमात्रसे कटिमात्री। तयबन्त—पञ्चतय से पञ्चतयी। ठगन्त—आक्षिक से आक्षिकी। ठञन्त—लावणिक से लावणिकी। कञन्त—यादृशसे यादृशी। क्वरबन्त—नश्वर से नश्वरी। नञन्त—स्त्रैण से स्त्रैणी। स्नञन्त—पौंस्न से पौंस्नी॥ *

यञ् प्रत्यय जिनके अन्त में हुआ हो, ऐसे शब्द भी स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त होते हैं और उनके यकार का लोप भी होजाता है--गार्ग्य से गार्गी। वात्स्य से वात्सी। किन्हीं २ के मतमें यञन्तसे स्त्रीलिङ्गमें पहिले (आयन्) प्रत्यय होकर पुनः उसके अन्तमें ईकार होताहै- गार्ग्यायणी

लोहितादि शब्दोंसे कत पर्यन्त नित्य (आयन्) प्रत्यय होकर ईकार होता है- लोहित से लौहित्यायनी। कत से कात्यायनी॥ इत्यादि

कौरव्य, माण्डूक और आसुरि शब्दोंसे भी (आयन्) प्रत्यय होकर ईकार होता है- कौरव्यायणी। माण्डूकायनी। आसुरायणी॥

अकारान्त द्विगु समास स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त होता है- त्रिलोकी। चतुश्लोकी। अष्टाध्यायी॥

ऊधस् शब्द जिसके अन्त में हो ऐसे बहुव्रीहि समास से स्त्रीलिङ्गमें (अन्) आदेश होकर अन्तमें ईकार होता है- घटोधस् से घटोघ्नी। कुण्डोधस् से कुण्डोघ्नी॥

दामन् और हायनान्त बहुव्रीहि भी स्त्रीलिङ्ग में

ईकारान्त होते हैं- द्विदाम से द्विदाम्नी । द्विहायन से द्विहायनी ॥

अन्तर्वत् और पतिवत् इन दो शब्दों से यदि क्रमशः गर्भिणी और पतिवाली स्त्री अभिधेय हों तो स्त्रीलिङ्ग में पहिले 'न्' प्रत्यय होकर अन्त में ईकार होता है- अन्तर्वत्नी=गर्भिणी । पतिवत्नी=भर्तृमती । अन्यत्र अन्तर्वती=शाला । पतिमती=पृथिवी । होगा ।

पति शब्द को यज्ञसंयोग में नकारादेश होकर पुनः स्त्रीलिङ्ग में ईकारादेश होता है—पत्नी=अर्द्धाङ्गिनी ॥

यदि पति शब्द से पूर्व कोई उपपद हो तो पत्यन्त शब्द से स्त्रीलिङ्ग में नकारादेश और ईकार विकल्प से होतेहैं—गृहपतिः, गृहपत्नी। वृषलपतिः, वृषलपत्नी ॥

सपत्नी आदि शब्दों को नित्य ही नकारादेश होकर ईकार होताहै । यथा—सपत्नी। एकपत्नी। वीरपत्नी॥

पूतक्रतु, वृषाकपि और अग्नि शब्दों के अन्त्य अच् को स्त्रीलिङ्ग में 'आयी' आदेश होजाताहै—पूतक्रतायी । वृषाकपायी । अग्नायी ॥

मनु शब्दको स्त्रीलिङ्ग में आयी और आवी दोनों आदेश होते हैं—मनायी । मनावी ॥

गुणवाचक उकारान्त शब्द से स्त्रीलिङ्ग में वैकल्पिक 'ई' प्रत्यय होता है । यथा—मृद्वी, मृदुः । पट्वी, पटुः । लघ्वी, लघुः । गुर्वी, गुरुः ॥ इत्यादि

बह्वादि गणपठित शब्दों से भी स्त्रीलिङ्ग में पाक्षिक 'ई' प्रत्यय होताहै—बह्वी, बहुः। पद्धती,पद्धतिः। यष्टी, यष्टिः । रात्री, रात्रिः । परन्तु 'क्तिन्' प्रत्ययान्तों

से नहीं होता—भक्तिः। शक्तिः। व्यक्तिः। जातिः॥

पुरुषवाचक शब्दों से स्त्री की आख्या में 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—गोप की स्त्री गोपी। दास की स्त्री दासी॥ इत्यादि, सूर्य शब्द से देवता अभिधेय हो तो 'आ, प्रत्यय होगा—सूर्या=सूर्यकी शक्ति रूप देवता का नामहै। अन्यत्र-सूरी=अर्थात् सूर्यनामक व्यक्तिकीस्त्री॥

इन्द्र, वरुण, भव, शर्व, रुद्र और मृड इन ६ शब्दों से पुंयोग में 'आनी, प्रत्यय होता है। यथा—इन्द्रस्य स्त्री=इन्द्राणी। एवं—वरुणानी। भवानी। शर्वाणी। रुद्राणी। मृडानी॥ हिम और अरण्य शब्द से महत्त्व अर्थ में 'आनी' प्रत्यय होता है—हिमानी=बर्फ के ढेर। अरण्यानी=वन के समूह॥ यव शब्द से दुष्ट और यवन शब्द से लिपि अर्थ में (आनी) प्रत्यय होता है—यवानी=दुष्टयव। यवनानी=यवनों की लिपि॥

मातुल और उपाध्याय शब्दों से पुंयोग में (आनी) प्रत्यय विकल्प से होता है, पक्षमें (ई) प्रत्यय होता है—मातुलानी, मातुली=मामा की स्त्री। उपाध्यायानी, उपाध्यायी=उपाध्याय की स्त्री॥ और जो आप ही अध्यापिका हो तो (ई) और (आ) प्रत्यय होंगे—उपाध्यायी, उपाध्याया। आचार्य शब्द से पुंयोग में (आनी) और स्वार्थ में (आ) प्रत्यय होता है—आचार्यानी=आचार्यस्य स्त्री। आचार्या=स्वयं व्याख्यात्री॥

अर्य और क्षत्रिय शब्दों से स्वार्थ में आनी और आ दोनों प्रत्यय होतेहैं—अर्याणी, अर्या=स्वामिनी या वैश्या। क्षत्रियाणी,क्षत्रिया=क्षात्र धर्म से युक्त स्त्री।

पुंयोग में केवल (ई) प्रत्यय होगा—अर्यी=स्वामि या वैश्य की स्त्री। क्षत्रियी=क्षत्रिय की स्त्री॥

संयोग जिसकी उपधा में न हो ऐसे अङ्गवाचक अकारान्त से यदि उपसर्जन उसके पूर्व हो तौ स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से (ई) प्रत्यय होता है—सुकेशी, सुकेशा। चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा। संयोगोपधसे केवल (आ) प्रत्यय होता है—सुगुल्फा। उन्नतस्कन्धा। उपसर्जन जिसके पूर्व न हो उससे भी 'आ' ही होताहै—शिखा। मज्जा। वसा। जंघा॥ इत्यादि

नासिका, उदर, ओष्ठ, जंघा, दन्त, कर्ण और शृङ्ग ये शब्द जिनके अन्त में हों उनसे स्त्रीलिङ्ग में ई और आ दोनों प्रत्यय होते हैं—तुङ्गनासिकी, तुङ्गनासिका। कृशोदरी, कृशोदरा। बिम्बोष्ठी, बिम्बोष्ठा। करभजंघी, करभजंघा। शुभ्रदन्ती, शुभ्रदन्ता। लम्बकर्णी, लम्बकर्णा। तीक्ष्णशृङ्गी, तीक्ष्णशृङ्गा॥

क्रोडादि शब्द जिसके अन्तमें हों तथा अनेकाच् शब्द से भी स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय न हो—कल्याणक्रोडा। सुजघना॥

सह, नञ् और विद्यमान ये जिसके पूर्व हों ऐसे अङ्गवाचक शब्दों से भी स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय न हो—सकेशा। अगुल्फा। विद्यमाननासिका॥

सह को 'स' और नञ् को 'अ' आदेश होगयाहै।

नख और मुख शब्द जिसके अन्तमें हों ऐसे प्रातिपदिक से भी संज्ञा अर्थमें 'ई' प्रत्यय न हो—शूर्पणखा।

गौरमुखा । ये किसी की संज्ञा हैं । संज्ञासे भिन्न अर्थमें-रक्तनखी । ताम्रमुखी ॥

दिग्वाचक शब्द जिसके पूर्वपद में हों ऐसे अङ्गवाचक प्रातिपदिकों से स्त्रीलिङ्ग में (ई) प्रत्यय होता है—प्राङ्मुखी । प्रत्यग्बाहुी । उदग्पदी ॥

वाह् प्रत्यय जिसके अन्तमें हो ऐसे प्रातिपादिक से भी स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होता है—दित्यौही । पष्ठौही ॥ इत्यादि

पाद और दन्त शब्द जिनके अन्त में हों, उनसे भी स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होता है—द्विपदी । त्रिपदी । चतुष्पदी । अष्टपदी । शतपदी ॥ सुदती । चारुदती । शुभ्रदती । कुन्ददती ॥

सखा और अशिशु शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होकर सखी और अशिश्वी ये दो निपातन हुवेहैं॥

यकार जिनकी उपधा में न हो और वे नियत स्त्रीलिङ्ग भी न हों ऐसे जातिवाचक शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होता है—कुक्कुटी । मयूरी । शूकरी । वृषली ॥ इत्यादि, जातिवाचक से भिन्न—भद्रा।मुण्डा॥ यकारोपध से—क्षत्रिया। वैश्या॥ नियत स्त्रीलिङ्ग से—बलाका । मक्षिका ॥ यकारोपधों में हय, गवय, मुकय, मनुष्य और मत्स्य इन पांच शब्दों को छोड़ देना चाहिये, इनसे तो सदा 'ई' प्रत्यय ही होगा—हयी । गवयी । मुकयी । मनुषी । मत्सी ॥ स्त्रीलिङ्ग में मनुष्य और मत्स्य शब्द के यकार का लोप होजाता है ॥

पाक, कर्ण, पर्ण, पुष्प, फल, मूल और बाल ये सात

शब्द जिनके अन्तमें हों ऐसे जातिवाचक प्रातिपदिकों से नियतस्त्रीलिङ्ग होने पर भी 'ई' प्रत्यय होता है। ओदनपाकी। शङ्कुकर्णी। मुद्गपर्णी। शंखपुष्पी। मधुफली। दर्भमूली। गोबाली। ये सब ओषधियों के नामहैं

मनुष्यजातिवाचक इकारान्त शब्दों से भी स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होता है- अवन्ती। कुन्ती। दाक्षी। इत्यादि,मनुष्य जाति से भिन्न तित्तिरि आदिमें न होगा॥

मनुष्यजातिवाचक उकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में 'ऊ' प्रत्यय होताहै- कुरूः। ब्रह्मबन्धूः। इत्यादि,मनुष्य जाति से भिन्न रज्जु, हनु इत्यादि में न होगा॥

बाहु शब्द जिसके अन्त में हो ऐसे प्रातिपदिक से संज्ञा विषय में 'ऊ' प्रत्यय हो—भद्रबाहूः=यह किसी की संज्ञा है। संज्ञा से अन्यत्र=सुबाहुः। यहां न हुवा॥

पङ्गु शब्दसे भी स्त्रीलिङ्ग में 'ऊ' प्रत्यय होताहै-पङ्गूः

श्वशुर शब्द से स्त्रीलिङ्ग में 'ऊ' प्रत्यय और उसके उकार एवं अकार का लोप होता है—श्वश्रूः॥

ऊरु शब्द जिसके अन्त में हो ऐसे प्रातिपदिक से उपमा अर्थमें 'ऊ' प्रत्यय होता है। करभोरूः। रम्भोरूः।

संहित, शफ, लक्षण, वाम, सहित और सह शब्द जिसके आदि में हों, ऐसे ऊरु शब्द से अनुपमार्थ में भी 'ऊ' प्रत्यय होता है--संहितोरूः। शफोरूः। लक्षणोरूः। वामोरूः। सहितोरूः। सहोरूः॥

कद्रु और कमण्डलु शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में संज्ञा अभिधेय हो तो 'ऊ' प्रत्य होता है- कद्रूः। कमण्डलूः। संज्ञा से अन्यत्र- कद्रुः। कमण्डलुः॥

शार्ङ्गरवादि गणपठित शब्दों से तथा अञ् प्रत्ययान्त प्रातिपदिकों से जाति अर्थ में 'ई' प्रत्यय होता है। शार्ङ्गरवादि—शार्ङ्गरवी। गौतमी। वात्स्यायनी। अञन्त—बैदी। काश्यपी। भारद्वाजी। शारद्वती। युवन् शब्द से स्त्रीलिङ्ग में 'ति' प्रत्यय होता है- युवतिः।

इति स्त्रीप्रत्ययाः

—:०:—

अथ समासप्रकरणम्।

अनेक पदों को एक पद में जोड़कर प्रयोग करना समास कहलाता है, परन्तु वह समर्थ (सापेक्ष) पदोंकाही होसकता है असमर्थ (अनपेक्ष) पदों का नहीं। जैसे—मनुष्याणां—समुदायः=मनुष्यसमुदायः=मनुष्योंकासमूह। यहां षष्ठ्यन्त मनुष्य पद प्रथमान्त समुदाय पद के साथ समर्थ (अपेक्षा) रखता है अर्थात् मनुष्योंका समुदाय। इसलिये समास होगया। प्रकृतिः मनुष्याणां समुदायः पशूनाम्=प्रकृति मनुष्यों की और समुदाय पशुओं का। यहां षष्ठ्यन्त मनुष्य शब्द की प्रथमान्त समुदाय शब्द के साथ अपेक्षा नहीं है, इसलिये समास न हुआ॥

समास में जितने पद हों उन सबके अन्त में एक विभक्ति रहती है, शेष विभक्तियों का लोप होजाता है जैसे—राज्ञः—पुरुषः=राजपुरुषः। यहां राजन् शब्द की षष्ठी का लोप होगया। तथा—पुरुषश्च मृगश्च चन्द्रमाश्च=पुरुषमृगचन्द्रमसः। यहां पुरुष और मृग इन दोनों शब्दों की प्रथमा का लोप होगया॥

समास ४ प्रकार का है – (१) अव्ययीभाव (२) तत्पुरुष (३) बहुव्रीहि (४) द्वन्द्व । द्विगु और कर्मधारय तत्पुरुष के ही अवान्तर भेद हैं ॥

अव्ययीभाव में पूर्वपद का अर्थ प्रधान होता है, जैसे—पञ्चनदम् । यहां 'पञ्च' शब्द प्रधान है । तत्पुरुषमें उत्तरपद प्रधान होता है जैसे—धनपतिः । यहां 'पति' शब्द प्रधान है । बहुव्रीहि में अन्यपदार्थ प्रधान होता है । जैसे—पीताम्बरः । यहां पीत और अम्बर इन दोनों शब्दों से भिन्न वह व्यक्ति जो पीत अम्बर वाली है, प्रधान है । द्वन्द्व में दोनों पद प्रधान रहते हैं । जैसे—शीतोष्णम् । यहां शीत और उष्ण दोनों ही प्रधान हैं

१—अव्ययीभावः ।

अव्ययों का सुबन्तों के साथ जो समास होता है उसे अव्ययीभाव कहते हैं, इसमें अव्यय के साथ समास होनेसे सुबन्त भी अव्ययवत् होजाते हैं, इसीलिये इसकी अव्ययीभाव संज्ञा है ॥

अव्ययी भाव समास में सदा अव्यय का सुबन्त से पूर्व प्रयोग होता है । यथा-अनुरूपम् ॥

अव्ययी भाव समास में सदा नपुंसकलिङ्गही होता है, नपुंसकलिङ्ग होने से अन्त्य के अच् को ह्रस्वभी होजाता है । यथा—अधिस्त्रि ॥

अव्ययी भाव समास दो प्रकार का होता (१) अव्यय पूर्वपद (२) नाम पूर्वपद ॥

१—अव्यय पूर्वपदः।

विभक्ति, समीप, समृद्धि, वृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, पश्चात्, (यथा=योग्यता, वीप्सा, अनतिक्रमण और सादृश्य), आनुपूर्व्य और साकल्य इन अर्थों में वर्त्तमान अव्यय का सुबन्त के साथ समास होकर अव्ययी भाव कहाता है। विभक्ति—स्त्रियां- अधि=अधिस्त्रि=स्त्रीमें। यहां विभक्ति से केवल सप्तम्यन्त का ग्रहण है। इसी प्रकार- अधिगिरि। अधिनदि। अध्यारामम्। अध्यात्मम् इत्यादि समीप- गुरोः समीपम्=उपगुरुम्=गुरु के समीप। यहां (उप) अव्यय समीप अर्थ में है। ऐसेही- उपग्रामम्। उपनगरम्। उपसदनम्। इत्यादि

समृद्धि—आर्याणां-समृद्धिः=स्वार्यम्=आर्यों की समुन्नति यहां 'सु' अव्यय समृद्धि अर्थमें है। ऐसेही सुभद्रम्। सुभगम्॥ इ० व्यृद्धि—शकानां-व्यृद्धिः=दुःशकम्=शकों की अवनति। यहां 'दुः' अव्ययअवनतिअर्थमेंहै, ऐसेही=दुर्यवनम्। दुर्भगम्॥ इ० अर्थाभाव—मक्षिकाणाम्-अभावः=निर्मक्षिकम्=मक्खियों का अभाव। यहां (निर) अव्यय अभाव अर्थ में है। ऐसे ही—निर्मशकम्। निर्हिंसम्॥ इत्यादि

अत्यय—हिमस्य-अत्ययः=अतिहिमम्=बर्फ का पिघल जाना। यहां (अति) अव्यय अत्यय (नाश) अर्थ में है, ऐसेही—अतीतम्। अतिक्रमम्॥ इत्यादि

पश्चात्—रथस्य—पश्चात्=अनुरथम्=रथके पीछे। यहां पश्चात् अर्थ में (अनु) अव्यय है। ऐसेही—अनुयूथम्। अनुहयम्। अनुपदम्॥ इत्यादि

यथा के चार अर्थ हैं—योग्यता, वीप्सा, अनतिक्रमण और सादृश्य। इन चारों अर्थों में अव्ययीभाव समास होता है। योग्यता—रूपस्य-योग्यम्=अनुरूपम्=रूपके योग्य। यहां योग्यता के अर्थ में 'अनु' अव्यय है, ऐसेही—अनुगुणम्। अनुशीलम्॥ इत्यादि

वीप्सा—अर्थमर्थम्-प्रति=प्रत्यर्थम्। द्विर्वचन का नाम वीप्सा है, यहां वीप्सा में 'प्रति' अव्यय है, ऐसेही—अनुवृत्तम्। परिनगरम्॥ इत्यादि

अनतिक्रमण—शक्तिम्-अनतिक्रम्य=यथाशक्ति। यहां अनतिक्रमण अर्थ में 'यथा' अव्यय है। ऐसेही—यथापूर्वम्। यथाशास्त्रम्॥ इत्यादि

सादृश्य—बन्धोःसादृश्यम्=सबन्धु=बन्धुके समान। यहां सादृश्यार्थ में (सह) अव्यय है, जिसको कि सकारादेश होगया है। ऐसेही—सकमलम्। ससागरम्॥ इ०

आनुपूर्व्य—ज्येष्ठस्य-आनुपूर्व्येण=अनुज्येष्ठम्=ज्येष्ठ के क्रमसे। यहां आनुपूर्व्य (क्रमशः) के अर्थ में (अनु) अव्यय है। ऐसेही—अनुवृद्धम्। अनुक्रमम्॥ इत्यादि

साकल्य—तृणेन-सह=सतृणम्=तृणसहित। यहां साकल्य (सम्पूर्ण) अर्थ में (सह) अव्यय है। ऐसेही—सजलम्। सपरिच्छदम्॥ इत्यादि

(यथा) अव्यय का असादृश्य अर्थ में ही सुबन्त के साथ समास होता है—यथाबलम्=बलके अनुसार। ऐसेही—यथावृद्धम्। यथापूर्वम्॥ इत्यादि, यहां असादृश्य अर्थ में ही समास हुवा है जहां सादृश्य होगा

यहां--यथा गौस्तथा गवयः=जैसी गाय वैसी नील गाय। वाक्य होगा न कि समास ॥

(यावत्) अव्यय का अवधारण अर्थ में ही सुबन्त के साथ समास होता है—यावद्भोज्यम्। यावदमत्रम्। यहां अवधारण अर्थमें समास है। अनवधारण में तौ—यावद्दत्तं तावद्भुक्तम्=जितना दिया उतना खाया, वाक्य होगा न कि समास ॥

अप, परि, बहिस् ये तीन अव्यय और अञ्चु धातु पञ्चम्यन्त पद के साथ समास को प्राप्त होते हैं—अप-विचारात्=अपविचारम्=विचार के विना। परि—नग-रात्=परिनगरम्=नगरके चारों ओर। बहिः—वनात्=बहिर्वनम्=वन के बाहर। प्राक् ग्रामात्=प्राग्ग्रामम्=ग्राम से पूर्व को ॥

(आ) अव्यय मर्यादा और अभिविधि अर्थ में पञ्चम्यन्त के साथ समास पाता है। मर्यादा—आ-मर-णात्=आमरणम्=मरणपर्यन्त। अभिविधि—आ-सक-लात्=आसकलम्=सब में व्याप्त होकर ॥

अभि और प्रति अव्यय आभिमुख्य अर्थ में लक्षण वाचक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त होते हैं—अग्निम्—अभि=अभ्यग्नि। अग्निम्—प्रति=प्रत्यग्नि=अग्नि के सम्मुख ॥

(अनु) अव्यय समीप अर्थ में सुबन्त के साथ समास पाता है—अनुवनम्=वनके समीप ॥ जिसका आयाम (विस्तार) 'अनु' अव्यय से प्रकाश किया जावै, उस ल-क्षण वाची सुबन्त के साथ भी (अनु) का समास होता

है—अनु-गङ्गायाः=अनुगङ्गम्=वाराणसी=गङ्गा के बराबर विस्तारवाली काशी । अनु-परिखायाः=अनुपरिखम्=दुर्गः=परिखा के बराबर विस्तार वाला दुर्ग ॥

२—नामपूर्वपदः ।

वंशवाचक शब्दों के साथ संख्यावाचक शब्दों का समास होता है । वंश का क्रम दो प्रकार से चलता है, एक जन्म से दूसरे विद्या से । जन्मसे—द्वौ मुनी वंशस्य कर्त्तारौ=द्विमुनि वंशम्=जो वंश दो मुनियों से चलाहो । विद्या से—त्रयः मुनयोऽस्य कर्त्तारः=त्रिमुनि व्याकरणम्=पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि ये तीन मुनि व्याकरण के बनाने वाले हुवे हैं, इसलिये (त्रिमुनि) व्याकरण की संज्ञा है ॥

नदीवाचक सुबन्त के साथ भी संख्यावाचक शब्दों का समास होता है—सप्तगङ्गम् । पञ्चनदम् ॥ इत्यादि समाहार में यह समास होता है ।

अन्य पदार्थ का वाचक सुबन्त भी नदीवाचक सुबन्त के साथ समास को प्राप्त होता है, यदि उस समस्त पद से कोई संज्ञा बनती हो—उन्मत्तगङ्गम् । लोहितगङ्गम् । ये किसी देश विशेष के नाम हैं । बहुव्रीहि के अर्थ में यह समास होता है ॥

सप्तम्यन्त पार और मध्य शब्द षष्ठ्यन्त सुबन्त के साथ विकल्प से समास पाते हैं और विभक्ति का लोप भी नहीं होता, पक्ष में वाक्य भी होता है, पारे—सिन्धोः=पारे सिन्धु अथवा सिन्धोः पारे=समुद्र के पार । मध्ये-मार्गस्य=मध्येमार्गम् वा मार्गस्य मध्ये=मार्गके बीचमें

अव्ययीभावे समासान्ताः प्रत्ययाः ।

शरत्, विपाश, अनस्, मनस्, उपानह्, दिव्, हिमवत्, अनडुह्, दिश्, दृश्, विश्, चेतस्, चतुर्, त्यद्, तद्, यद्, कियत् और जरस् शब्द जिसके अन्त में हों ऐसा अव्ययीभाव समास अकारान्त होजाता है- उपशरदम् । अधिमनसम् । अनुदिवम् । अपदिशम् । प्रतिविशम् । आचतुरम् ॥ इत्यादि

प्रति, पर, सम् और अनु इन अव्ययों से परे जो (अक्षि) शब्द वह अव्ययीभाव समास में अकारान्त हो जाताहै।यथा—प्रति-अक्षि=प्रत्यक्षम्।पर-अक्षि=परोक्षम्। सम्—अक्षि=समक्षम् । अनु अक्षि=अन्वक्षम् ॥

अव्ययीभाव समास में अन्नन्त सुबन्त के अन्त का जो नकार उसका लोप होकर अकारान्त पद होजाता है—उप-राजन्=उपराजम् । अधि-आत्मन्=अध्यात्मम्

यदि वह अन्नन्त शब्द नपुंसक लिङ्ग हो तो विकल्प से नकार का लोप और अकारान्त होता है— उपचर्मम्, उपचर्म । अधिशर्मम्, अधिशर्म ॥

नदी, पौर्णमासी और आग्रहायणी ये शब्द जिसके अन्त में हों, ऐसा अव्ययीभाव समास भी विकल्प से अकारान्त होता है । यथा —उपनदम्, उपनदि । उपपौर्णमासम्, उपपौर्णमासि । उपाग्रहायणम्, उपाग्रहायणि

वर्गों का पहिला, दूसरा, तीसरा और चौथा अक्षर जिसके अन्त में हो, ऐसा अव्ययीभाव समास भी विकल्पसे अकारान्त होताहै—उपसमिधम्, उपसमित्। अधिवाचम्, अधिवाक्। प्रतियुधम्, प्रतियुत् ॥

गिरि शब्दान्त अव्ययीभाव भी विकल्प से अकारान्त होता है—उपगिरम्, उपगिरि ॥

तत्पुरुषः ।

तत्पुरुष समास ८ प्रकार का है। यथा-[१] प्रथमा तत्पुरुष [२] द्वितीया तत्पु० [३] तृतीया तत्पु० [४] चतुर्थी तत्पु० [५] पञ्चमी तत्पु० [६] षष्ठी तत्पु० [७] सप्तमी तत्पुरुष और [८] नञ् तत्पुरुष ॥

तत्पुरुष समास के पूर्वपद में जो विभक्ति होती है उसीके नाम से उसका निर्देश किया जाता है। जैसे-ग्रामं गतः=ग्रामगतः। यहां पूर्वपद में द्वितीया है। इसलिये यह द्वितीयातत्पुरुष हुवा ॥

प्रथमातत्पुरुषः ।

पूर्व, अपर, अधर और उत्तर ये प्रथमान्त पद अपने अवयवी षष्ठ्यन्त के साथ एकाधिकरण में समास को प्राप्त होते हैं। यथा—पूर्वं—कायस्य=पूर्वकायः। अपरकायः। उत्तरग्रामः। अधरवृक्षः ॥ इत्यादि

एकदेश वाचक जितने पद हैं, वे सब कालवाचक षष्ठ्यन्त के साथ समास को प्राप्त होते हैं। यथा—सायः-अहः=सायाह्नः। मध्याह्नः। पूर्वाह्नः। अपराह्नः। मध्यरात्रः।

द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और तुरीय ये शब्द भी अपने अवयवी एकाधिकरण षष्ठ्यन्त सुबन्त के साथ विकल्प से समस्त होते हैं। यथा—द्वितीयं—भिक्षायाः=द्वितीयभिक्षा=भिक्षा का दूसरा। पक्ष में (भिक्षाद्वितीयम्) षष्ठीतत्पुरुष होगा। इसी प्रकार—तृतीयं—शालायाः=

तृतीयशाला, शालातृतीयं वा । चतुर्थमाला, माला चतुर्थं वा । तुरीयावस्था, अवस्थातुरीयं वा ॥

प्राप्त और आपन्न शब्द द्वितीयान्त सुबन्तके साथ समस्त होते हैं—प्राप्तः—विद्याम्=प्राप्तविद्यः । आपन्नः—जीविकाम्=आपन्नजीविकः । पक्षमें—विद्या प्राप्तः । जीविकापन्नः । द्वितीयातत्पुरुष भी होगा ।

कालवाचक शब्द परिमाण वाची षष्ठ्यन्त पद के साथ समस्त होते हैं । यथा—मासः—जातस्य=मास जातः । संवत्सरजातः । द्व्यहजातः । त्र्यहजातः ॥

द्वितीयातत्पुरुषः ।

श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न ये शब्द द्वितीयान्त सुबन्त के साथ समस्त होते हैं । यथा—वृक्षं—श्रितः=वृक्षश्रितः । दुःखम्—अतीत.= दुःखातीतः । ऐसेही—भूमिपतितः । ग्रामगतः । अध्ययनात्यस्तः । यौवनप्राप्तः । शरणापन्नः ॥ इत्यादि

द्वितीयान्त खट्वा शब्द [क्त] प्रत्ययान्त सुबन्त के साथ समस्त होता है, यदि वाक्य से निन्दा सूचित होती हो । खट्वाम्—आरूढः=खट्वारूढो जाल्मः=खाट में बैठा हुवा कपटी । जहां निन्दा न होगी वहां समास भी न होगा ॥

कालवाचक द्वितीयान्त पद सुबन्त के साथ अत्यन्त संयोग में समस्त होते हैं- मुहूर्त्तं—सुखम्=मुहूर्त्तसुखम् ॥

तृतीयातत्पुरुषः ।

तृतीयान्त पद अन्य सुबन्त के साथ समास पाता है यदि वह सुबन्त तृतीयान्त पदवाच्य वस्तुकृत गुण

वा अर्थ से विशिष्ट (युक्त) हो । यथा—मधुना-मत्तः= मधुमत्तः । पङ्केन-लिप्तः=पङ्कलिप्तः । वाणेन-विद्धः= वाणविद्धः । जहां तृतीयाकृत गुण न होगा वहां समास भी न होगा । जैसे-अक्ष्णा काणः । शिरसा खल्वाटः ॥

पूर्व, सदृश, सम, ऊनार्थ, कलह, निपुण, मिश्र और श्लक्ष्ण इन पदों के साथ तृतीया का समास होता है । मासेन-पूर्वः=मासपूर्वः । मात्रा-सदृशः=मातृसदृशः । पित्रा-समः=पितृसमः । माषेण-ऊनम्=माषोनम् । वाचा-कलहः=वाक्कलहः । आचारेण-निपुणः=आचारनिपुणः।गुडेन-मिश्रः=गुडमिश्रः।स्नेहेन-श्लक्ष्णः=स्नेहश्लक्ष्णः

कर्त्ता और करण अर्थ में जो तृतीयान्त पद वह कृदन्त के साथ समास को प्राप्त होता है । कर्त्तामें— मित्रेण-त्रातः=मित्रत्रातः । विष्णुना-दत्तः=विष्णुदत्तः ॥ करण में—नखैः-भिन्नः=नखभिन्नः । खड्गेन-हतः=खड्गहतः इत्यादि, जहां तृतीया कर्त्ता और करणमें न होगी, वहां समास भी न होगा जैसे—"भिक्षाभिरुषितः" यहां हेतु में तृतीया होने से समास न हुवा ॥

कर्त्ता और करण अर्थ में जो तृतीयान्त पद वह अधिकार्थवचन में कृत्यसंज्ञक प्रत्ययों के साथ समास को प्राप्त होता है । स्तुति निन्दा पूर्वक अर्थवाद जहां हो उसे अधिकार्थवचन कहते हैं । कर्त्ता में—काकैः-पेया=काकपेया=नदी । इस उदाहरण में नदी का उत्तटाका (पायाब) होना स्तुति और मलादिसंसृष्ट होना निन्दा है । करणमें—वातेन-छेद्यम्=वातच्छेद्यम्=

तृणम् । इस उदाहरण में भी तृण की कोमलता से स्तुति और तुच्छता से निन्दा दोनों सूचित होती हैं ॥

व्यञ्जनवाची तृतीयान्त पद अन्नवाचक सुबन्त के साथ समास पाता है । दध्ना-ओदनः=दध्योदनः । सूपेन-ओदनः=सूपौदनः ॥ इत्यादि

ओजस्, सहस्, अम्भस्, तमस् और अञ्जस् शब्दों की तृतीया का समास होने पर भी लोप नहीं होता । यथा—ओजसाधर्षितम् । सहसाकृतम् । अम्भसाऽभिषिक्तम् । तमसाऽऽच्छन्नम् । अञ्जसाचरितम् ॥

पुंस् और जनुस् शब्द से क्रमशः अनुज और अन्ध शब्द परे हों तो भी तृतीया का लोप नहीं होता-- पुंसानुजः । जनुषान्धः ॥

मनस् शब्द की तृतीया का संज्ञा में लोप नहीं होता - मनसागुप्ता=यह किसी की संज्ञा है, संज्ञा से अन्यत्र—मनोदत्ता । मनोभुक्ता । लोप होजायगा ॥

आत्मन् शब्द की तृतीया का भी लोप नहीं होता यदि पूरण प्रत्ययान्त शब्द से उसका समास हो—आत्मनापञ्चमः । आत्मनाषष्ठः ॥

चतुर्थीतत्पुरुषः ।

कार्यवाचक चतुर्थ्यन्त पद कारणवाचक सुबन्त के साथ समस्त होता है । यथा—यूपाय—दारु=यूपदारु । कुण्डलाय--हिरण्यम्=कुण्डलहिरण्यम् । यहां दारु और हिरण्य, यूप और कुण्डल के कारण हैं, इसलिये समास होगया । रन्धनाय स्थाली । अवहननायोलूखलम् । यहां

रन्धन और अवहनन, स्थाली और उलूखल की क्रियाहैं न कि कारण, इसलिये समास न हुवा ॥

चतुर्थ्यन्त पदका अर्थ शब्द के साथ नित्य समास होता है और विशेष्य के अनुसार ही विशेषण का लिङ्ग भी होता है । यथा--द्विजाय--अयम्=द्विजार्थः सूपः । द्विजाय-इयम् = द्विजार्था यवागूः । द्विजाय--इदम्= द्विजार्थं पयः ॥ इत्यादि

बलि, हित, सुख और रक्षित पदों के साथ चतुर्थ्यन्त पदका समास होता है—भूतेभ्यो बलिः=भूतबलिः । गवे हितम्=गोहितम् । प्रजायै सुखम्=प्रजासुखम् । बालेभ्यो रक्षितम्=बालरक्षितम् ॥

यदि व्याकरण की परिभाषा विवक्षित हो तो आत्मन् और पर शब्द की चतुर्थी का समास में लोप नहीं होता-आत्मनेपदम् । आत्मनेभाषा । परस्मैपदम् । परस्मै-भाषा । ये व्याकरण की संज्ञा हैं ॥

पञ्चमीतत्पुरुषः ।

पञ्चम्यन्त सुबन्त भय और उसके पर्याय शब्दों के साथ समास पाता है- चोरात्—भयम्=चोरभयम् । सर्पात्- भीतः = सर्पभीतः । वृकात्-भीतिः = वृकभीतिः ॥

अपेत, अपोढ, मुक्त, पतित और अपत्रस्त इन शब्दों के साथ कहीं २ पर पञ्चमी का समास होता है- सुखात्-अपेतः = सुखापेतः । कल्पनाया-अपोढः = कल्पनापोढः । चक्रात् मुक्तः = चक्रमुक्तः। स्वर्गात्-पतितः = स्वर्गपतितः। तरङ्गात्-अपत्रस्तः = तरङ्गापत्रस्तः। कहीं नहीं भी होता। जैसे- प्रासादात्पतितः । दुःखान्मुक्तः । सिंहादपत्रस्तः ॥

पञ्चम्यन्त अल्प, समीप और दूर अर्थों के वाचक पद और कृच्छ्र शब्द भूतकालवाचक (क्त) प्रत्ययान्त शब्द के साथ समास पाते हैं और इनके समास में पञ्चमी का लोप भी नहीं होता—अल्पान्मुक्तः । स्तोकान्मुक्तः । समीपादागतः । अन्तिकादागतः । दूरादायातः । विप्रकृष्टादायातः । कृच्छ्रान्मुक्तः ॥

पञ्चम्यन्त शत और सहस्र शब्द पर शब्द के साथ समास पाते हैं और उनका पर निपात भी होता है—शतात्-परे=परश्शताः । सहस्रात्-परे=परस्सहस्राः ॥

षष्ठीतत्पुरुषः ।

षष्ठ्यन्त पद सम्बन्धवाचक शब्द के साथ समास पाताहै—राज्ञः- पुरुषः=राजपुरुषः । विद्याया-आलयः= विद्यालयः । शस्त्राणाम्- अगारः=शस्त्रागारः ॥

याजकादि शब्दों के साथ भी षष्ठ्यन्त पद का समास होता है—ब्राह्मणानां याजकः=ब्राह्मणयाजकः । देवानां पूजकः=देवपूजकः । ऐसेही—विद्यास्नातकः । सामाध्यापकः । रिपुत्सादकः ॥ इत्यादि

गुणवाचक (तर) प्रत्यय के साथ षष्ठ्यन्त पद का समास होता है और समास होने पर [तर] प्रत्यय का लोप होजाता है- सर्वेषां- श्वेततरः = सर्वश्वेतः । सर्वेषां- गुणवत्तरः = सर्वगुणवान् । सर्वेषां- पूज्यतरः = सर्वपूज्यः ॥

जिस पदार्थका जो गुण है उसके साथ भी षष्ठीका समास होता है- चन्दनस्य- गन्धः = चन्दनगन्धः । इक्षोः- रसः = इक्षुरसः ॥ इत्यादि

वाक्, दिक् और पश्यत् इन षष्ठ्यन्त पदों का यदि युक्ति, दण्ड और हर इन उत्तरपदों के साथ क्रमशः समास हो तो षष्ठी का लोप नहीं होता—वाचोयुक्तिः। दिशोदण्डः। पश्यतोहरः॥

यदि मूर्ख अभिधेय हो तो देव शब्द की षष्ठी का प्रिय शब्द के साथ समास होने पर लोप न हो- देवानां प्रियः=मूर्खः। अन्यत्र-देवप्रियः = विद्वान्॥

श्वन् शब्द की षष्ठी का शेप, पुच्छ और लाङ्गूल इन तीन पदों के साथ समास होने पर लोप नहीं होता- शुनःशेपः। शुनःपुच्छः। शुनोलाङ्गूलः॥

दिव् शब्द की षष्ठी का दास शब्द के साथ समास होनेपर लोप नहीं होता- दिवोदासः॥

विद्या और योनि सम्बन्धी ऋकारान्त शब्दों की षष्ठी का भी समास में लोप नहीं होता॥

विद्या--होतुरन्तेवासी। पितुरन्तेवासी॥

योनि—होतुः पुत्रः। पितुःपुत्रः॥

स्वसृ और पति शब्द उत्तरपदमें हों तो उक्त विशेषण विशिष्ट ऋकारान्त शब्दों की षष्ठी का लोप विकल्पसेहोताहै-मातुःस्वसा,मातृष्वसा।पितुःस्वसा,पितृष्वसा। दुहितुःपतिः, दुहितृपतिः। ननान्दुःपतिः,ननान्दृपतिः॥

षष्ठीतत्पुरुषस्यापवादाः।

निर्धारण अर्थ में षष्ठी का समास नहीं होता— नृणां श्रेष्ठः। धावतां शीघ्रगः। गवां कृष्णा। इत्यादि यहां निर्धारण अर्थ होने से समास नहीं होता और जहां निर्धारण में समास होगा जैसे कि—मनुजव्याघ्रः।

यदुश्रेष्ठः। रघुपुङ्गवः। इत्यादि, वहां सप्तमी तत्पुरुष समझना चाहिये, क्योंकि निर्धारण में केवल षष्ठी-समास का निषेध है।

पूरण प्रत्ययान्त शब्द, गुणवाचक और तृप्त्यर्थक शब्द तथा शतृ, शानच् और तव्य प्रत्ययान्त, एवं अव्यय और समानाधिकरण पदों का भी षष्ठी के साथ समास नहीं होता।

पूरणार्थक—वसूनां पञ्चमः। रुद्राणां षष्ठः। रिपूणां चतुर्थः
गुणवाचक—बकस्य शौक्ल्यम्। काकस्य कार्ष्ण्यम्॥
तृप्त्यर्थक—फलानां तृप्तः। मोदकानां प्रीतः॥
शतृ- ब्राह्मणानामुपकुर्वन्। शास्त्राणामधिगच्छन्॥
शानच्—दीनस्योपकुर्वाणः। कुसुमस्याददानः॥
तव्य—ब्राह्मणस्य कर्त्तव्यम्। आलस्येधितव्यम्॥
अव्यय—ओदनस्य भुक्त्वा। पयसः पीत्वा॥
समानाधिकरण- नलस्य राज्ञः। तक्षकस्य सर्पस्य॥

पूजा अर्थ में [क्त] प्रत्ययान्त के साथ षष्ठ्यन्त का समास नहीं होता—विदुषांमतः। सतांबुद्धः।साधूनांपूजितः।

अधिकरण वाचक [क्त] प्रत्ययान्त के साथ भी षष्ठी का समास नहीं होता- मृगाणाम् आसितम्। विप्राणां भुक्तम्। सतां गतम्॥

कर्त्ता के अर्थ में जो तृच् और अक प्रत्यय उनके साथ भी षष्ठी का समास नहीं होता।

तृजन्त- अपां स्रष्टा। पुरां भेत्ता। कुटुम्बस्य भर्त्ता॥
अक- सूपस्य पाचकः। दण्डस्य धारकः॥ इत्यादि

सप्तमीतत्पुरुषः ।

शौण्डादि गणपठित शब्दों के साथ सप्तम्यन्त पद का समास होता है—अक्षेषु- शौण्डः=अक्षशौण्डः । कर्मसु- कुशलः=कर्मकुशलः । कलासु-निपुणः=कलानिपुणः ॥

सिद्ध, शुष्क, पक्व और बन्ध इन शब्दों के साथ भी सप्तम्यन्त का समास होता है—तर्के- सिद्धः=तर्कसिद्धः । आतपे—शुष्कः=आतपशुष्कः । स्थाल्यां–पक्वः= स्थालीपक्वः । चक्रे-बन्धः=चक्रबन्धः ॥

यदि ऋण [आवश्यक] अर्थ अभिप्रेत हो तो सप्तम्यन्त पद कृत्य प्रत्ययान्तों के साथ समास पाता है और सप्तमी का लोप भी नहीं होता—मासेदेयम्= ऋणम् । पूर्वाह्णेगेयम्=साम । यहां ऋण का देना और साम का गाना आवश्यक कार्य हैं । अनावश्यक अर्थ में—मासे देया भिक्षा । समास न होगा, क्योंकि भिक्षा का देना ऋण के समान आवश्यक नहीं है ॥

सप्तम्यन्त पद अन्य सुबन्त के साथ समास पाता है, यदि उस समस्त पदसे कोई संज्ञा बनती हो—वनेचरः । युधिष्ठिरः । यहांभी सप्तमीका लोप नहीं होता ॥

सप्तम्यन्त दिन और रात के अवयव और 'तत्र' अव्यय भूतकाल वाचक (त) प्रत्यय के साथ समास पाते हैं—पूर्वाह्णे - कृतम्=पूर्वाह्णकृतम् । ऐसेही—अपररात्रसुप्तम् । उषः प्रबुद्धम् । तत्रभुक्तम् । तत्रपीतम् ॥ इत्यादि, अहनि दृष्टम् । रात्री सुप्तम् । यहां दिन और रात के अवयव न होने से समास नहीं हुआ ॥

सप्तम्यन्त सुबन्त भूतकाल वाचक 'त' प्रत्ययान्त के साथ समास पाता है, यदि वाक्य से निन्दा पाई जावै- उदकेविशीर्णम् । भस्मनिहुतम्। पानी में बखेरना और भस्म में होम करना निष्फल होने से निन्दास्पद हैं। यहां भी सप्तमी का लोप नहीं होता ॥

हलन्त और अकारान्त शब्दोंसे परे समासमें सप्तमी का लोप नहीं होता, यदि समास होकर संज्ञा बनती हो।

हलन्त—युधिष्ठिरः । त्वचिसारः ॥ इत्यादि

अकारान्त—वनेचरः । अरण्येतिलकः ॥ इत्यादि

'ज' शब्द उत्तरपद में हो तो प्रावृट्, शरद्, काल और दिव् शब्द की सप्तमी का लोप न हो—

प्रावृषिजः । शरदिजः । कालेजः । दिविजः ॥

८—नञ्तत्पुरुषः ।

(न) यह निषेध आदि अर्थवाचक अव्यय सुबन्त के साथ समास पाता है और तत्पुरुष कहलाता है ॥

यदि (न) से आगे हलादि उत्तरपद हो तो नमुचि, नकुल, नख, नपुंसक, नक्षत्र, नक्र और नग इन शब्दों को छोड़कर उसके नकार का लोप होजाता है । यथा—न- ब्राह्मणः=अब्राह्मणः । न- पण्डितः=अपण्डितः । न-कर्म=अकर्म । न-जः=अजः ॥ इत्यादि

यदि (न) से आगे अजादि उत्तरपद हो तो नासत्य और नाक शब्दों को छोड़कर उसके स्थान में (अन्) आदेश होजाता है—न- अश्वः=अनश्वः । न- ईशः=अनीशः । न- उष्ट्रः=अनुष्ट्रः । न- ऋतः=अनृतः ॥ इत्यादि—

कर्मधारयः।

जिस तत्पुरुष समास में दोनों पद समानाधिकरण हों अर्थात् समान लिङ्ग, वचन और विभक्तिवाले हों उसको कर्मधारय समास कहते हैं, इसके सात भेद हैं—

[१] विशेषणपूर्वपद [२] विशेष्यपूर्वपद [३] विशेषणोभयपद [४] उपमानपूर्वपद [५] उपमानोत्तरपद [६] सम्भावनापूर्वपद [७] अवधारणापूर्वपद ॥

विशेषणपूर्वपदः।

जिसमें विशेषण विशेष्य से पहिले रहे, उसको विशेषणपूर्वपद कहते हैं॥

विशेषण अपने विशेष्य के साथ बहुल करके समास पाता है। यथा—नीलम्—उत्पलम्=नीलोत्पलम्। कृष्णः—सर्पः=कृष्णसर्पः। रक्ता-लता=रक्तलता॥ बहुल कहने से कहीं नहीं भी होता, जैसे—रामो जामदग्न्यः। कृष्णो वासुदेवः। कहीं विकल्प से होता है—नीलं वस्त्रम्, नीलवस्त्रम्॥

सत्, महत्, परम, उत्तम और उत्कृष्ट शब्द पूज्यमान पदों के साथ समास पाते हैं—सत्-वैद्यः=सद्वैद्यः। महान्-वैयाकरणः=महावैयाकरणः। ऐसेही- परमभक्तः। उत्तमपुरुषः। उत्कृष्टबोधः॥

कतर और कतम शब्द जातिवाचक शब्द के साथ प्रश्नार्थमें समास पातेहैं—कतरः-कठः=कतरकठः=कौनसा कठ? कतमः-कलापः=कतमकलापः=कौनसा कलाप?

(किम्) सर्वनाम विशेष्यपद के साथ निन्दार्थ में

समास पाता है· किंराजा यो न रक्षति=वह कैसा राजा जो रक्षा नहीं करता । किंसखा योऽभिद्रुह्यति=वह कैसा मित्र जो द्रोह करता है ॥

पूर्व, अपर, प्रथम, चरम, जघन्य, मध्य, मध्यम और वीर शब्द विशेष्य पद के साथ समास पाते हैं—पूर्व वैयाकरणः । अपराध्यापकः। प्रथमवैदिकः।चरमोऽध्यायः । जघन्यजातिः । मध्यकौमुदी । मध्यमवयः । वीरपुत्रः ॥

एक, सर्व, जरत्, पुराण, नव और केवल शब्द विशेष्य पद के साथ समास पाते हैं—एकशिष्यः। सर्व जनः। जरद्गवः। पुराणावसथम् । नवान्नम् । केवल वैयाकरणः ॥

पाप और अणक शब्द कुत्सित विशेष्य पद के साथ समास पाते हैं- पापनापितः। अणककुलालः ॥

२—विशेष्यपूर्वपदः ।

जिसमें विशेष्य विशेषण से पूर्व रहे, उसे विशेष्य पूर्वपद कहते हैं ॥

विशेष्य पद निन्दाबोधक विशेषण पद के साथ समास पाते हैं। जैसे—वैयाकरणखसूचिः । मीमांसक दुर्दुरूढः। अध्वर्युसर्वाजीनः। ब्रह्मचार्युदरम्भरिः ॥

पोटा, युवति, स्तोक, कतिपय, गृष्टि, धेनु, वशा, वेहत, वष्कयणी, प्रवक्तृ, श्रोत्रिय, अध्यापक और धूर्त इन पदों के साथ जातिवाचक शब्दोंका समास होताहै- इभपोटा। इभयुवतिः ॥ इत्यादि

स्तुतिसूचक विशेषणों के साथ जातिवाचक विशेष्य का समास होता है· गोप्रशस्ता। नारीसुशीला ॥ इ०

कुमारी शब्द श्रमणादि शब्दों के साथ समास पाता है- कुमारी- श्रमणा=कुमारश्रमणा । कुमारगर्भिणी ॥

गर्भिणी शब्द के साथ चतुष्पाद् जातिवाचक शब्द समास पाते हैं—गोगर्भिणी । अजागर्भिणी ॥ इत्यादि

३—विशेषणोभयपदः ।

जिसके दोनों पद विशेषण वाचक हों, वह विशेषणोभयपद कहलाता है ॥

पूर्वकालिक विशेषण पद अपरकालिक विशेषण पदों के साथ समास पाते हैं—पूर्वं स्नातः—पश्चादनुलिप्तः=स्नातानुलिप्तः=पहिले न्हाया और पीछे अनुलेप किया । ऐसेही- भुक्तानुसुप्तः । पीतप्रतिबद्धः ॥ इ०

नञ् विशिष्ट 'त' प्रत्ययान्त के साथ नञ् रहित (त) प्रत्ययान्त का समास होता है- कृतञ्च-- अकृतञ्च तद्=कृताकृतम् । इसीप्रकार—गतागतम् । उक्तानुक्तम् । स्थितास्थितम् । दृष्टादृष्टम् ॥ इत्यादि

कृत्यप्रत्ययान्त और तुल्यार्थक शब्द अजातिवाचक पदके साथ समास पाते हैं—

कृत्यान्त—भोज्योष्णम् । पानीयशीतलम् ॥

तुल्यार्थक—तुल्यारुणः । सदृशश्वेतः । समानपिङ्गलः ॥

वर्णवाचक पद अपने समानाधिकरण अन्य वर्ण वाचक पद के साथ समास पाता है- कृष्णसारङ्गः । लोहितरक्तः ॥ इत्यादि

मयूरव्यंसक आदि समानाधिकरण शब्द कर्मधारय समास में निपातन किये गये हैं—मयूरव्यंसकः । अकिञ्चनः । कांदिशीकः ॥ इत्यादि

४—उपमानपूर्वपदः।

उपमानबोधक शब्द जिसके पूर्वपद में रहे, वह उपमानपूर्वपद कहलाता है॥

उपमानवाचक पद उपमेय वाचक पद के साथ समास पाते हैं· घन (इव) श्यामः=घनश्यामः। ऐसेही- इन्दुवदनः। तमालनीलः। कर्पूरगौरः॥ इत्यादि

५--उपमानोत्तरपदः।

उपमानवाचक शब्द जिसके उत्तरपद में हो, उसे उपमानोत्तरपद कहते हैं॥

उपमेयवाचक शब्द व्याघ्रादि उपमानवाची शब्दों के साथ समास पाते हैं, यदि उनका स्वाभाविक धर्म क्रूरत्वादि विवक्षित नहो-पुरुषः व्याघ्र(इव)=पुरुषव्याघ्रः। ऐसेही- नृसिंहः। मुखपद्मम्। करकिसलयम्॥ इत्यादि

६--सम्भावनापूर्वपदः।

जिसमें सम्भावना पाई जाय ऐसा विशेषण अपने विशेष्य के साथ समास पाता है—गुण (इति) बुद्धिः= गुणबुद्धिः। आलोक (इति) शब्दः=आलोकशब्दः॥

७--अवधारणापूर्वपदः।

जिसमें अवधारणा पाई जाय ऐसा विशेषण पदभी अपने विशेष्य पद के साथ समास पाता है· विद्या [एव] धनम्=विद्याधनम्। ऐसेही- तपोबलम्। क्षमाशस्त्रम्॥ इ०

द्विगुः।

जिस तत्पुरुष के संख्यावाचक शब्द पूर्वपद में हो वह द्विगु कहाता है। द्विगु समास दो प्रकार का है [१]

एकवद्भावी [२] अनेकवद्भावी। समाहार अर्थ में जो द्विगु होता है, वह एकवद्भावी कहलाता है और उसमें सदा नपुंसकलिङ्ग और एकवचन होता है। यथा-त्रीणि शृङ्गाणि समाहृतानि=त्रिशृङ्गम्। पञ्चानां नदीनां समाहारः=पञ्चनदम्। संज्ञा में जो द्विगु होता है वह अनेकवद्भावी कहलाता है, इसमें वचन और लिङ्ग का कोई नियम नहीं है- त्रयो लोकाः=त्रिलोकाः। चतस्रो दिशः= चतुर्दिशः। सप्त ऋषयः=सप्तर्षयः॥ इत्यादि

तत्पुरुषे समासान्ताः प्रत्ययाः।

राजन्, अहन् और सखि शब्द जिसके अन्त में हों ऐसा तत्पुरुष अकारान्त होजाता है- अधिराजः। उत्तमाहः। परमसखः॥

अङ्गुलिशब्दान्त तत्पुरुष यदि संख्यावाचक शब्द वा अव्यय उसके आदिमें हो तो अकारान्त होजाताहै- द्व्यङ्गुलम्। दशाङ्गुलम्। निरङ्गुलम्॥

अहन्, सर्व, पूर्व, अपर, मध्य, उत्तर, संख्यात और पुण्य ये शब्द जिसके आदि में हों, ऐसा रात्रिशब्दान्त तत्पुरुष अकारान्त होता है—अहोरात्रः। सर्वरात्रः। पूर्वरात्रः। अपररात्रः। मध्यरात्रः। उत्तररात्रः। संख्यात रात्रः। पुण्यरात्रः॥

संख्या जिसके पूर्व में हो ऐसा रात्रि शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है—द्विरात्रम्। त्रिरात्रम्॥ इत्यादि

सर्व, पूर्व, अपर, मध्य, उत्तर, तथा संख्यावाचक शब्द और अव्यय से परे 'अहन्' शब्द को तत्पुरुष समास में

'अह्न' आदेश होता है—सर्वाह्णः। पूर्वाह्णः। अपराह्णः। मध्याह्नः। उत्तराह्णः। द्व्यह्नः। त्र्यह्णः। अत्यह्णः॥ इत्यादि, परन्तु समाहारद्विगु में 'अह्न' आदेश नहीं होता—द्वयोरह्नोः समाहारः=द्व्यहः। त्र्यहः॥ पुण्य और एक शब्द से परे भी (अहन्) शब्द को (अह्न) आदेश नहीं होता—पुण्याहम्। एकाहः॥

ग्राम और कौट शब्दों से परे तक्षन् शब्द तत्पुरुष समास में अकारान्त होजाता है—ग्रामस्य तक्षा=ग्रामतक्षः। कौटतक्षः॥

द्वि और त्रि शब्दोंसे परे अञ्जलि शब्द द्विगु समास में विकल्प से अकारान्त होता है--द्व्यञ्जलम्, द्व्यञ्जलि। त्र्यञ्जलम्, त्र्यञ्जलि॥

समानाधिकरण विशेष्य उत्तरपद में हो तो तत्पुरुष समास में (महत्) शब्द आकारान्त होजाता है—महादेवः। महाबाहुः। महाबलः॥

द्वि और अष्टन् शब्द शत संख्या से पूर्व तत्पुरुष समास में आकारान्त होते हैं, बहुव्रीहि समास में वा अशीति शब्द परे हो तो नहीं होते—द्वादश। द्वाविंशतिः। द्वात्रिंशत्। अष्टादश। अष्टाविंशतिः। अष्टात्रिंशत्॥ इत्यादि, शतसंख्या से आगे नहीं होता—द्विशतम्। अष्टसहस्रम्। बहुव्रीहि में भी नहीं होता—द्वित्राः। (अशीति) शब्द उत्तरपद में हो तब भी नहीं होता—द्व्यशीतिः॥

(त्रि) शब्द को उक्त विषय में [त्रयः] आदेश होता है—त्रयोदशः। त्रयोविंशतिः। त्रयस्त्रिंशत्॥

शतसंख्या से आगे—त्रिशतम्। त्रिसहस्रम् ॥ बहुव्रीहि में—त्रिदश=त्रिदशाः। अशीति में—त्र्यशीतिः ॥

अष्टन्, द्वि और त्रि शब्दों से चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति और नवति शब्द परे हों तो उनको क्रमसे अष्टा, द्वा और त्रयस् आदेश विकल्प से होते हैं—द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत्। अष्टापञ्चाशत्, अष्टपञ्चाशत्। त्रयःषष्टिः। त्रिषष्टिः ॥ इत्यादि

—०—

बहुव्रीहिः।

बहुव्रीहि समास सात प्रकार का है [१] द्विपद [२] बहुपद [३] सहपूर्वपद [४] संख्योत्तरपद [५] संख्योभयपद [६] व्यतिहारलक्षण [७]दिगन्तराललक्षण ॥

१—द्विपदः

दो पदों की अपेक्षा से जो समास होता है, उसे द्विपद बहुव्रीहि कहते हैं ॥

प्रथमान्त विशेष्य और विशेषण पद एक प्रथमा विभक्ति को छोड़कर और सब विभक्तियों के अर्थ में समास पाते हैं—

द्वितीया—प्राप्तम्-उदकम् (यं सः) प्राप्तोदकः=ग्रामः ॥
तृतीया—जितः-मन्मथः (येन सः) जितमन्मथः=शिवः ॥
चतुर्थी—दत्तः-मोदकः (यस्मै सः) दत्तमोदकः=शिशुः ॥
पञ्चमी—उद्धृता-ओदना(यस्याः सा)उद्धृतोदना=स्थाली

षष्ठी—काषायम्-अम्बरम् (यस्य सः) काषायाम्बरः=भिक्षुः
सप्तमी—वीराः पुरुषा (यस्यां सा) वीरपुरुषा=नगरी ॥

(प्र) आदि उपसर्गों के साथ धातुज सुबन्त की मध्यस्थता में सुबन्त का समास होकर मध्यस्थ धातुज सुबन्त का लोप होजाता है—

प्र—पतितानि-पर्णानि [यस्य सः] प्रपर्णः=वृक्षः
उद्—गताः-तरङ्गाः [यस्मात्सः] उत्तरङ्गः=ह्रदः
निर्—गता-लज्जा [यस्य सः] निर्लज्जः=कामुकः

(नञ्) के साथ सत्तार्थवाचक शब्दों के योग में सुबन्त का समास होकर सत्तार्थवाचक शब्दों का लोप होजाता है—

न—अस्ति-पुत्रः (यस्य सः) अपुत्रः=पुत्रहीनः
न—विद्यते-भार्या " " अभार्यः=स्त्रीरहितः
न—वर्त्तते-धनम् " " अधनः=दरिद्रः

२—बहुपदः

साधनदशा में दो से अधिक पदों का जो समास होता है, उसे बहुपद बहुव्रीहि कहते हैं। इसमें भी प्रथमान्त विशेष्य और विशेषण पद एक प्रथमा विभक्ति को छोड़कर और सब विभक्तियोंके अर्थमें समासपातेहैं—

अधिकः—उन्नतः-अंसः[यस्यसः] अधिकोन्नतांसः=पुष्टः
परमा—स्थूला-दृष्टिः " " परमस्थूलदृष्टिः=मूर्खः
पराक्रमेण उपार्जिता-सम्पत् [येनसः]पराक्रमोपार्जितसम्पत्

३—सहपूर्वपदः

[सह] अव्यय तृतीयान्त पद के साथ समान संयोग

अर्थ में समास पाता है और [सह] को (स) आदेश भी होजाता है, परन्तु आशीर्वाद अर्थ में [सह] को [स] आदेश नहीं होता—सह-पुत्रेण=सपुत्रः। ऐसेही-सभार्यः। सानुजः। सकर्मकः। सलोमकः। सपरिच्छदः॥ इत्यादि, आशीर्वाद में--सह पुत्राय सहामात्याय राज्ञे स्वस्ति॥

४—संख्योत्तरपदः

संख्येय के साथ अव्यय तथा आसन्न, अदूर और अधिक शब्द समास पाते हैं—

उपदशाः=दश के समीप [नौ या ग्यारह]

आसन्नविंशाः=बीस के निकट [उन्नीस वा इक्कीस]

अदूरत्रिंशाः=तीस के पास (उनतीस वा इकतीस)

अधिकचत्वारिंशाः=चालीससे अधिक (अड़तालीस तक)

५—संख्योभयपदः

संख्येय के साथ जो संख्या का समास होता है, वह संख्योभयपद कहाता है अर्थात् इसके दोनों पद संख्यावाचक होते हैं--

द्वौ [वा] त्रयः (वा) द्वित्राः = दो वा तीन

पञ्च [वा] षट् (वा) पञ्चषाः = पांच वा छह

द्वाभ्याम् (अधिकाः) दश = द्विदशाः = बारह

त्रिभिः (आवृत्ताः) दश = त्रिदशाः = तीस

६—व्यतिहारलक्षणः

परस्पर दो पदार्थों के संघर्षण को व्यतिहार कहते हैं, इस अर्थ में जो समास होता है उसको व्यतिहार लक्षण कहते हैं॥

समान रूप सप्तम्यन्त दो पद ग्रहण अर्थ में और समान रूपही तृतीयान्त दो पद प्रहार अर्थ में समास पातेहैं, समास होकर पूर्वपदको दीर्घादेश होजाता है–
ग्रहण—केशेषु केशेषु गृहीत्वा प्रवृत्तम्=केशाकेशि=युद्धम्
प्रहार—दण्डैः दण्डैः प्रहृत्य प्रवृत्तम्=दण्डादण्डि=युद्धम्

एक दूसरे के केशों को पकड़कर जो युद्ध होता है, उसे केशाकेशि और एक दूसरे पर दण्ड का प्रहार करते हुवे जो युद्ध होता है, उसे दण्डादण्डि कहते हैं ॥

७—दिगन्तराललक्षणः

दिशाओं के मध्यको दिगन्तराल कहते हैं, वह जिससे जाना जाय उसको दिगन्तराल लक्षण समास कहते हैं ॥

दिशाओं के नाम यदि उनका अन्तराल [मध्य] वाच्य हो तौ समास पाते हैं ।

दक्षिणस्याः—पूर्वस्याः(दिशोर्यदन्तरालंसादिक्)दक्षिणपूर्वा
उत्तरस्याः—पूर्वस्याः " " " उत्तरपूर्वा
उत्तरस्याः—पश्चिमायाः " " " उत्तरपश्चिमा
दक्षिणस्याः—पश्चिमायाः " " " दक्षिणपश्चिमा

बहुव्रीहौ समासान्ताः प्रत्ययाः

जिन स्त्रीवाचक शब्दों से पुरुष की विवक्षा हो, वे बहुव्रीहि समास में समानाधिकरण पद के परे रहते पुंवत् होजाते हैं—चित्रा गावो यस्य सः=चित्रगुः । दर्शनीया भार्या यस्य सः दर्शनीयभार्यः ।

जिस बहुव्रीहि समास के अन्तमें पूरण प्रत्ययान्त स्त्रीलिङ्ग अथवा प्रमाणी शब्दहो, वहअकारान्त होजाताहै

कल्याणी—पञ्चमी (यासां सा) कल्याणपञ्चमा=रात्रिः
स्त्री—प्रमाणी (यस्य सः) स्त्रीप्रमाणः=पुरुषः

ई, ऊ, ऋ ये जिसके अन्त में हों ऐसे बहुव्रीहि समास से 'क' प्रत्यय होता है और पूर्वपद का रूप पुंल्लिङ्ग के समान होजाता है—

ई—कल्याणी-पञ्चमी [यस्य सः] कल्याणपञ्चमीकः=पक्षः
ऊ—प्रिया-सुभ्रू ,, ,, प्रियसुभ्रूकः=पुरुषः
ऋ—बहवः-कर्त्तारः ,, ,, बहुकर्तृकः=पटः

संख्येय में जो बहुव्रीहि होता है, वह अकारान्त होता है। यथा-उपदशाः। आसन्नविंशाः॥ इत्यादि

जिस बहुव्रीहि समास के अन्त में प्राण्यङ्गवाचक सक्थि और अक्षि शब्द हों, वह भी अकारान्त होता है—दीर्घसक्थः। कमलाक्षः। प्राण्यङ्ग से अन्यत्र—दीर्घसक्थि शकटम्। स्थूलाक्षा यष्टिः॥

काष्ठवाचक अङ्गुलिशब्दान्त बहुव्रीहि भी अकारान्त होताहै—पञ्चाङ्गुलं दारु। काष्ठसेअन्यत्र—पञ्चाङ्गुलिर्हस्तः

द्वि और त्रि शब्द से परे मूर्धन् शब्द भी बहुव्रीहि समास में अकारान्त होता है—द्विमूर्धः। त्रिमूर्धः॥

अन्तर् और बहिस् शब्दसे परे लोम शब्दभी बहुव्रीहि समासमें अकारान्त होता है—अन्तर्लोमः। बहिर्लोमः॥

न तथा दुस् और सु अव्ययों से परे प्रजा और मेधा शब्द बहुव्रीहि समास में विसर्गान्त होजाते हैं—अप्रजाः। दुष्प्रजाः। सुप्रजाः। अमेधाः। दुर्मेधाः। सुमेधाः॥

धर्म शब्दान्त बहुव्रीहि द्विपदसमास में आकारान्त

होजाता है- कल्याणं धर्मोऽस्येति=कल्याणधर्मा । अहिंसाधर्मा । सत्यधर्मा ॥

सु, हरित, तृण और सोम इन शब्दों से परे जम्भ शब्द भी बहुव्रीहि समास में आकारान्त होता है-- सुष्ठु-जम्भोऽस्य=सुजम्भा । हरितजम्भा । तृणजम्भा । सोमजम्भा । जम्भ दान्त और भक्ष्य का नाम है ॥

कर्मव्यतिहार में जो बहुव्रीहि समास होता है, वह इकारान्त होजाता है—केशाकेशि । दण्डादण्डि । नखानखि ॥ इत्यादि

प्र और सम् उपसर्गों से परे बहुव्रीहि समास में (जानु) शब्द को (ज्ञु) आदेश होता है- प्रगते जानुनी यस्य सः=प्रज्ञुः । सङ्गते जानुनी यस्य सः=संज्ञुः ॥

[ऊर्ध्व] शब्दसे परे [जानु] शब्द को उक्त समासमें [ज्ञु]आदेश विकल्प से होताहै- ऊर्ध्वे जानुनी यस्य सः= ऊर्ध्वज्ञुः, ऊर्ध्वजानुः ॥

यदि बहुव्रीहि समास के अन्तमें [धनुस्] शब्द हो तो उसको 'धन्वा' आदेश होजाता है, परन्तु संज्ञा में विकल्प से होता है—शार्ङ्गं धनुर्यस्य सः=शार्ङ्गधन्वा । गाण्डीवधन्वा । संज्ञा में—शतानि धनूंषि यस्य सः= शतधन्वा, शतधनुः ॥

यदि बहुव्रीहि समास के अन्त में जाया शब्द हो तो उसको (जानि) आदेश होजाता है—युवतिः-जाया अस्य=युवजानिः । प्रियजानिः । कर्कशजानिः ॥

उत्, पूति, सु और सुरभि इन शब्दों से परे गन्ध शब्द को बहुव्रीहि समास में इकारादेश होता है—

उद्गतः-गन्धः (यस्य सः)=उद्गन्धिः। सुष्ठु-गन्धः [यस्य सः]=सुगन्धिः। पूतिगन्धिः। सुरभिगन्धिः॥

उपमानवाचक शब्द से परे भी गन्ध शब्द बहुव्रीहि समास में इकारान्त होता है—पद्मस्येव गन्धो यस्य सः=पद्मगन्धिः। रसालगन्धिः॥

हस्तिन् आदि शब्दों के अतिरिक्त यदि उपमान वाचक शब्दों से परे पाद शब्द हो तो उसके अकार का लोप होता है—व्याघ्रपात्। काष्ठपात्। इत्यादि, हस्त्यादि में नहीं होता—हस्तिपादः। अश्वपादः। अजपादः॥ इत्यादि

संख्या और सु जिसके पूर्व में हों, ऐसे पाद शब्द के अकार का भी लोप होता है—द्विपात्। त्रिपात्। चतुष्पात्। सुपात्॥

संख्या और सु पूर्वक (दन्त) शब्द को वयोनिर्धारण अर्थ में (दन्) आदेश होता है—द्विदन्। चतुर्दन्। षोडन्। [षट्] को (षो) आदेश होजाता है। सुदन्। वयोनिर्धारण से अन्यत्र—द्विदन्तः। सुदन्तः॥

सु और दुर् उपसर्ग से आगे हृदय शब्दको बहुव्रीहि समास में मित्र और अमित्र वाच्य हों तो [हृत्] आदेश होता है—सुहृत्=मित्रम्। दुर्हृत्=शत्रुः। अन्यत्र—सुहृदयः। दुर्हृदयः॥

जिस बहुव्रीहि समास के अन्त में उरस्, सर्पिस्, पुंस्, अनडुह्, पयस्, नौ और लक्ष्मी शब्द हों, उस से (क) प्रत्यय होता है—विशालोरस्कः। प्रियसर्पिष्कः। दृढपुंस्कः। स्वनडुत्कः। सुपयस्कः। आसन्ननौकः। बहुलक्ष्मीकः॥

नञ् से परे जो अर्थ शब्द उसको भी बहुव्रीहि समासमें (क) प्रत्यय होताहै—अनर्थकम् । नञ् से अन्यत्र-अपार्थम्, अपार्थकम् ॥ विकल्प से होगा ॥

[इन्] प्रत्यय जिसके अन्त में हो, ऐसे बहुव्रीहि से भी स्त्रीलिङ्ग में 'क' प्रत्यय होता है—बहवोवाग्मिनः [यस्यां सा] बहुवाग्मिका=सभा । बहवो दण्डिनः [यस्यां सा]=बहुदण्डिका=नगरी ॥

जिन शब्दों से बहुव्रीहि समास में कोई समासान्त प्रत्यय न हुवा हो उनसे 'क' प्रत्यय विकल्प से होताहै-महत्—यशः [यस्य सः]=महायशस्कः, महायशाः । सुमनस्कः, सुमनाः । प्राप्तफलकः, प्राप्तफलः ॥ इत्यादि

(क) प्रत्यय आगे हो तो आकारान्त स्त्रीलिङ्ग को बहुव्रीहि समासमें विकल्प से ह्रस्व होताहै—बहुमालाकः, बहुमालकः[क] के अभाव में—बहुमालः ॥

बहुव्रीहि समास होकर जो संज्ञा बनती है, उससे (क) प्रत्यय नहीं होता—विश्वे देवाः [यस्य सः] विश्वदेवः । सर्वदक्षिणः ॥

(ईयस्) प्रत्यय जिसके अन्त में हो ऐसे बहुव्रीहि समास से भी (क) प्रत्यय नहीं होता—बहवः श्रेयांसः [यस्य सः] बहुश्रेयान् । बहुप्रेयान् ॥ इत्यादि

भ्रातृ शब्दान्त बहुव्रीहि से पूजा अर्थ में (क) प्रत्यय नहीं होता—सुभ्राता । धर्मभ्राता । अन्यत्र-मूर्खभ्रातृकः ॥

जिस बहुव्रीहि समास के अन्तमें स्वाङ्गवाचक नाड़ी और तन्त्री शब्द हों उससे भी [क] प्रत्यय नहीं होता—बह्व्यः—नाड्यः [यस्य सः] बहुनाडिः=कायः । बहुतंत्री

=ग्रीवा ॥ स्वाङ्ग से भिन्न—बहुनाडीकः=स्तम्भः । बहुतन्त्रीका=वीणा ॥

४—द्वन्द्वः

द्वन्द्व समास के ३ भेद हैं (१) इतरेतरयोग (२)समाहार ॥ [३] एकशेष ॥

१—इतरेतरयोगः

जिसमें दो वा अधिक पदों का क्रिया की अपेक्षा से परस्पर योग होता है, उसे इतरेतरयोग कहते हैं। इसमें यदि दो पदों की उक्ति हो तो द्विवचन और अनेकपदों की उक्ति में बहुवचन होता है। लिङ्ग जो पर का होता है, वही समस्त पद का भी रहता है—स्त्रीच पुरुषश्च=स्त्रीपुरुषौ । दीप्तिश्च भगश्च यशश्च=दीप्तिभगयशांसि ॥

इतरेतर योग समास में इकारान्त और उकारान्त शब्दों का पूर्व प्रयोग करना चाहिये—हरिहरौ । मृदुक्रूरौ । यदि समास में अनेक इकारान्त और उकारान्त पद हों तो उनमें से एक में ही यह नियम समझना चाहिये, सब में नहीं—पटुमृदुशुक्लाः, पटुशुक्लमृदवः ॥

जिस पद के आदि में अच् और अन्त में अकार हो उसका भी इतरेतर द्वन्द्व में पूर्व प्रयोग होता है—इन्द्रवरुणौ । उष्ट्रखरौ । जहां अजादि अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त शब्दों का समास हो, वहां अजादि अकारान्त का ही पूर्वप्रयोग होता है-इन्द्राग्नी । इन्द्रवायू॥

यदि अल्पाच् और अधिकाच् शब्दों का परस्पर

द्वन्द्वसमास हो तो अल्पाच् शब्द पूर्व रहता है—शिव वैश्रवणौ। नागार्जुनौ ॥ इत्यादि

समानाक्षर ऋतु और नक्षत्रों के समास में यथाक्रम शब्दों का प्रयोग होनाचाहिये—हेमन्तशिशिरवसन्ताः। चित्रास्वाती। असमानाक्षरों में यह नियम नहीं है—ग्रीष्मवसन्तौ। पुष्यपुनर्वसू ॥ इत्यादि

लघ्वक्षर और दीर्घाक्षर पदों के समास में लघ्वक्षर पद का पूर्व प्रयोग होता है—कुशकाशम्। शरचापम् ॥

वर्णवाचक पदों के द्वन्द्वसमास में यथाक्रम शब्दों का प्रयोग होता है—ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः। ब्राह्मणक्षत्रियौ। क्षत्रियवैश्यौ। वैश्यशूद्रौ ॥

ज्येष्ठ और कनिष्ठ भ्राताओंके इतरेतरयोगमें ज्येष्ठभ्राता का पूर्व प्रयोग होताहै—रामलक्ष्मणौ। युधिष्ठिरार्जुनौ ॥

संख्यावाचक शब्दों के द्वन्द्व में अल्प संख्या का पूर्व प्रयोग होता है—एकादश। द्वादश। द्वित्राः। त्रिचतुराः। पञ्चषाः ॥ इत्यादि

२—समाहारद्वन्द्वः

जिसमें अवयवी के समूहवाचक पदों का क्रिया की अपेक्षासे समास होता है, उसे समाहारद्वन्द्व कहते हैं। इसमें सदा नपुंसक लिङ्ग और एकवचन होता है ॥

प्राणि, तूर्य और सेना के अङ्गों का जो परस्पर समास होता है, वह एकवचनान्त होजाता है—

प्राण्यङ्ग—पाणीच पादौच=पाणिपादम्। मुखनासिकम् ॥
तूर्याङ्ग—मार्दङ्गिकपाणविकम्। भेरीपटहम् ॥
सेनाङ्ग—रथिकाश्वारोहम्। असिचर्मपट्टिशम् ॥

जिन ग्रन्थों का पठन पाठन अति समीप होता हो अर्थात् एक के बाद दूसरा पढ़ा जाता हो, उनके समाहारद्वन्द्व में भी एकवचन होता है—शिक्षाव्याकरणम् । काव्यालङ्कारम् ॥ इत्यादि

प्राणिवर्जित जातिवाचक सुबन्तों के द्वन्द्वसमास में भी एकवचन होता है—धानाशष्कुलि । मोदकापूपम् । शय्यासनम् ॥

भिन्न लिङ्गस्थ नदीवाचक और देशवाचक पदों के समाहारद्वन्द्व में भी एकवचन होता है—गङ्गाशोणम् । मिथिलामगधम् । समान लिङ्गों में नहीं होता—गङ्गा यमुने । मद्रकेकयाः ॥ इत्यादि

क्षुद्रजन्तुवाचक पदों के समाहारद्वन्द्व में भी एकवचन होता है—यूकालिक्षम् । क्रमिकीटम् । दंशमशकम् ॥ इत्यादि

जिन जन्तुओं का परस्पर स्वाभाविक वैर होता है, उनके समाहारद्वन्द्व में भी एकवचन होता है—अहिनकुलम् । मूषिकमार्जारम् । काकोलूकम् । गोव्याघ्रम् ॥

जो पंक्तिसे बाह्य नहीं ऐसे शूद्रों के समाहार द्वन्द्व में भी एकवचन होताहै- तक्षायस्कारम् । स्वर्णकारकुलालम् । अन्त्यजोंके समासमें नहीं होता-चर्मकारचाण्डालौ॥

गवाश्व आदिक शब्द समाहार द्वन्द्वमें एकवचनान्त निपातन कियेगयेहैं-गवाश्वम् । अजाविकम् । स्त्रीकुमारम् । उष्ट्रखरम् । यकृन्मेदः । दर्भशरम् । तृणोपलम् ॥ इत्यादि

वृक्ष, मृग, तृण, धान्य, व्यञ्जन, पशु और पक्षी इन अर्थों के वाचक तथा अश्व, वडव, पूर्वापर और अधरोत्तर

इन पदोंके समाहारद्वन्द्व में एकवचन विकल्प से होताहै-

वृक्ष—प्लक्षन्यग्रोधम्, प्लक्षन्यग्रोधौ ।

मृग—रुरुपृषतम्, रुरुपृषतौ ।

तृण—कुशकाशम्, कुशकाशौ ।

धान्य—व्रीहियवम्, व्रीहियवौ ।

व्यञ्जन—दधिघृतम्, दधिघृते ।

पशु—गोमहिषम्, गोमहिषौ ।

पक्षी—शुकवकम्, शुकवकौ । अश्ववडवम्, अश्ववडवौ । पूर्वापरम्, पूर्वापरे । अधरोत्तरम्, अधरोत्तरे ॥

फल, सेना, वनस्पति, मृग, पक्षी, क्षुद्रजन्तु, धान्य और तृण इन अर्थों के वाचक शब्दों को बहुत्व की विवक्षा में ही एकवचन होता है, एकत्व और द्वित्व की विवक्षा में नहीं- बदराणि च आमलकानि च= बदरामलकम् । हस्तिनः अश्वाश्च=हस्त्यश्वम् । ऐसेही- प्लक्षन्यग्रोधम् । रुरुपृषतम् । शुकवकम् । व्रीहियवम् । कुशकाशम् । बहुत्व से भिन्न एकत्व और द्वित्व की विवक्षा में—बदरामलके । हस्त्यश्वौ ॥ इत्यादि

परस्पर विरुद्धार्थ दो शब्दों के (यदि वे किसी द्रव्य के विशेषण न हों) समाहारद्वन्द्व में भी विकल्प से एकवचन होता है- शीतोष्णम्, शीतोष्णे । सुखदुःखम्, सुखदुःखे । धर्माधर्मम्, धर्माधर्मौ । जहां किसी द्रव्यके विशेषण होंगे वहां—शीतोष्णे उदके ॥

दधि पयस् आदि शब्दों के समाहार द्वन्द्व में एकवचन नहीं होता—दधिपयसी । दीक्षातपसी । ऋक्सामे । वाङ्मनसी ॥ इत्यादि

विद्या और योनि सम्बन्ध वाचक ऋकारान्त शब्दों के ऋकार को उत्तरपद परे रहे तो द्वन्द्वसमास में आकारादेश होताहै विद्या—होतापोतारौ। नेष्टोद्गातारौ। योनि—मातापितरौ। पितापुत्रौ॥ इ०

वायुभिन्न देवतावाचक शब्दों के द्वन्द्व समास में भी उत्तरपद के परे रहते पूर्वपद को आकारादेश होता है- सूर्याचन्द्रमसौ। मित्रावरुणौ। वायु शब्द के योग में नहीं होता—अग्निवायू। वाय्वग्नी॥

अग्नि शब्द को सोम और वरुण शब्द परे हों तो द्वन्द्व समास में ईकारादेश होता है—अग्नीषोमौ। अग्नीवरुणौ॥

दिव् शब्द को द्वन्द्व समासमें 'द्यावा' आदेश होता है- द्यावाभूमी। द्यावापृथिव्यौ॥

उषस् शब्द द्वन्द्व समास में आकारान्त होजाता है—उषासासूर्यम्॥

मातृ पितृ शब्दोंको द्वन्द्व समास में विकल्पसे 'मातर' 'पितर' आदेश होते हैं- मातरपितरौ। मातापितरौ॥

च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, द्, ष्, ह, ये जिसके अन्तमें हों ऐसा समाहारद्वन्द्व अकारान्त होजाता है—वाक्त्वचम्। त्वक्स्रजम्। शमीदृषदम्। वाक्त्विषम्। छत्रोपानहम्॥

३—एकशेषः

जिसमें दो पदों का समास होनेपर एक शेष रह जावै, उसे एकशेष कहते हैं॥

वृद्ध के साथ युवा का द्वन्द्व समास हो तो युवा

का लोप होकर वृद्धही शेष रह जाता है—गार्ग्यश्च गार्ग्यायणश्च=गार्ग्यौ ॥

स्त्री के साथ पुरुष का समास हो तौ स्त्री का लोप होकर पुरुषही शेष रहजाता है- हंसीच हंसश्च=हंसौ ॥

स्वसा और दुहिता के साथ क्रमशः भ्राता और पुत्र का समास हो तौ स्वसा और दुहिता का लोप होकर भ्राता और पुत्रही शेष रह जाते हैं—स्वसाच भ्राताच= भ्रातरौ। दुहिता च पुत्रश्च=पुत्रौ ॥

माताके साथ पिता का और श्वश्रू के साथ श्वशुर का समास हो तो विकल्प से पिता और श्वशुर शेष रहते हैं माताच पिताच=पितरौ, मातापितरौ। श्वश्रू च श्वशुरश्च=श्वशुरौ, श्वश्रूश्वशुरौ ॥

स्त्रीलिङ्ग और पुंल्लिङ्ग के साथ यदि नपुंसकलिङ्ग का समास हो तौ नपुंसकलिङ्ग शेष रहता है और उसको विकल्प से एकवचन होता है—शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, शुक्लं वस्त्रं, तदिदं शुक्लम्। तानीमानि शुक्लानि ॥

त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवत् और किम् सर्वनाम सब शब्दों के साथ समास होने में शेष रहते हैं—सच देवदत्तश्च=तौ। यश्च यज्ञदत्तश्च=यौ। यदि उक्त सर्वनामों में हो परस्पर समास हो तौ जो पर हो वह शेषरहे—सच यश्च=यौ। यश्च सच=तौ। यदि उक्त सर्वनामों में स्त्रीलिङ्ग और पुंल्लिङ्ग का समास हो तौ पुंल्लिङ्ग शेष रहे— साच सच=तौ। यदि पुंल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग का समास हो तौ नपुंसकलिङ्ग शेष रहता है—सच तच्च=ते ॥ इ०

तरुणावस्था से भिन्न अनेक शफ वाले ग्राम्य पशु समूह की विवक्षा में स्त्रीलिङ्ग शेष रहता है—गाव इमाः। अजा इमाः। ग्राम्य से भिन्न—रुरव इमे। पशु से भिन्न—ब्राह्मणा इमे। तरुणावस्था में—वत्सा इमे। एकशफ वालों में—अश्वाइमे॥

समासेषु शब्दानां परिवर्त्तनानि।

(हृदय) शब्द को (हृत्) आदेश होता है यदि उस से आगे लेख और लास शब्द तथा यत् और अण् प्रत्यय हों—हृल्लेखः। हृल्लासः। हृद्यम्। हार्दम्॥

शोक और रोग शब्द तथा ष्यञ् प्रत्यय परे रहे तो हृदय शब्द को [हृत्] आदेश विकल्प से होता है—हृच्छोकः, हृदयशोकः। हृद्रोगः, हृदयरोगः। सौहृद्यम्, सौहार्द्यम्॥

पाद शब्द को (पत्) आदेश होता है, यदि उससे आगे आजि, आति, ग, उपहत और हति शब्द हों—पदाजिः। पदातिः। पदगः। पदोपहतः। पद्धतिः॥

पाद शब्द से [यत्] प्रत्यय परे हो तो अतदर्थ में उसको (पत्) आदेश होता है—पद्याः=शर्कराः कण्टका वा। तदर्थ में न होगा—पाद्यम्=पादार्थमुदकम्॥

घोष, मिश्र, शब्द और निष्क शब्द परे हों तो पाद शब्द को [पत्] आदेश विकल्प से होता है—पद्घोषः, पादघोषः। पन्मिश्रः, पादमिश्रः। पच्छब्दः, पादशब्दः। पन्निष्कः, पादनिष्कः॥

उदक शब्द को [उद] आदेश होता है, चाहे वह किसी शब्द के पूर्व हो या उत्तर, यदि उससे कोई संज्ञा बनती हो-उदमेघः । उदधिः । क्षीरोदः । नीलोदः ॥ कुम्भ, पात्र, मन्थ, ओदन, सक्तु, बिन्दु, वज्र, भार, हार और ग्राह ये शब्द उत्तरपद में हों तो उदक शब्द को (उद) आदेश विकल्पसे होता है—उदकुम्भः, उदककुम्भः। उदपात्रम् , उदकपात्रम् । उदमन्थः, उदकमन्थः । उदौदनः, उदकौदनः ॥ इत्यादि

कृदन्त उत्तरपद में हो तो रात्रि शब्द को विकल्प से अनुस्वार आदेश होता है-रात्रिञ्चरः, रात्रिचरः । रात्रिमटः, रात्र्यटः ॥ इत्यादि

संज्ञा, ग्रन्थ, अधिक और अनुमेय अर्थों में उत्तर पद परे हो तो (सह) अव्यय को [स] आदेश होता है। संज्ञा-सपलाशम् । साश्वत्थम् । ग्रन्थ-सकलं ज्योतिषम् । ससंग्रहं व्याकरणम् । अधिक-सलवणः सूपः । समिष्टं पायसम् । अनुमेय—साग्निर्धूमः । स दक्षिणेष्टिः ॥ इ०

ज्योतिष् , जनपद, रात्रि, नाभि, नामन् , गोत्र, रूप, स्थान, वर्ण, वयस् , वचन और बन्धु ये शब्द उत्तरपद में हों तो 'समान' शब्द को भी [स] आदेश होजाता है-समानं ज्योतिः=सज्योतिः। समानो जनपदः= सजनपदः । समाना रात्रिः=सरात्रिः । ऐसेही-सनाभिः । सनाम । सगोत्रः । सरूपः । सस्थानः । सवर्णः । सवयाः। सवचनः । सबन्धुः ॥

यत् प्रत्ययान्त तीर्थ और उदर शब्द परे हों तो भी (समान) शब्द को (स) आदेश होता है—

समानं तीर्थं यस्य सः=सतीर्थ्यः सहाध्यायी। समानम् उदरं यस्य सः=सोदर्यः=भ्राता॥

दृक् और दृश् शब्द परे हों तो भी समान को 'स' आदेश होताहै—समाना दृक् यस्य सः=सदृक् वा सदृशः

'इदम्' को 'ई' और 'किम्' को 'की' तथा यद्, तद् और एतद् सर्वनामों को आकार अन्तादेश होता है, यदि उनसे आगे दृक्, दृश् शब्द या वत् प्रत्यय हो। इदम्—ईदृक्। ईदृशः। इयान्॥ किम्—कीदृक्। कीदृशः। कियान्॥ यद्—यादृक्। यादृशः। यावान्॥ तद्—तादृक्। तादृशः। तावान्॥ एतद्—एतादृक्। एतादृशः। एतावान्॥ इदम् और किम् शब्दों से परे 'वत्' के वकार को यकार आदेश होजाता है—इयान्। कियान्॥

द्वि, अन्तर् शब्द तथा अकारान्त भिन्न उपसर्ग से परे यदि 'अप्' शब्द हो तो उसको 'ईप्' आदेश होजाता है—द्विर्गता आपो यस्मिंस्तद्=द्वीपम्। जिस स्थल के दो ओर जल हो उसे द्वीप कहते हैं। अन्तर्गता आपो यस्मिंस्तद्=अन्तरीपम्। जिसके भीतर जल हो अर्थात् जलाशय का नाम अन्तरीप है। समीपम्=निकट। प्रतीपः=प्रतिकूल। सम् के योग में 'ईप्' का अर्थ निकट, और प्रति के योग में प्रतिकूल होजाता है॥

यदि देश अभिधेय हो तो [अनु] उपसर्ग से परे (अप्) शब्द को (ऊप्) आदेश होता है—अनुगता आपोयस्मिन् स अनूपो देशः। जिस स्थलके चारों ओर जल हो उसको अनूप कहते हैं॥

षष्ठी और तृतीया विभक्तिसे भिन्न अन्य शब्द को यदि उससे आगे आशिस्, आशा, आस्था, आस्थित, उत्सुक, ऊति, कारक, राग, शब्द और ईय् प्रत्यय हो तौ अन्यद् आदेश होजाता है—अन्या-आशीः=अन्यदाशीः। अन्या-आशा=अन्यदाशा। ऐसेही—अन्यदास्था। अन्यदास्थितः। अन्यदुत्सुकः। अन्यदूतिः। अन्यत्कारकः। अन्यद्रागः। अन्यदीयः॥ षष्ठी और तृतीयामें नहोगा—अन्यस्य-आशीः=अन्याशीः।अन्येनआस्थितः=अन्यास्थितः

अर्थ शब्द उत्तरपद में हो तौ (अन्य) शब्द को विकल्प से [अन्यद्] आदेश होता है—अन्यदर्थः, अन्यार्थः ॥

(कु) अव्यय को तत्पुरुष समास में अजादि उत्तर पद हो तौ (कद्) आदेश होता है—कु-अन्नम्=कदन्नम्। कु—अश्वः=कदश्वः। कदुष्ट्रः॥ इत्यादि, हलादि उत्तर पद में न होगा—कुपुरुषः। कुभार्यः॥

रथ और वद शब्द परे हों तौभी 'कु'को 'कद्' आदेश होता है—कुत्सितो रथः=कद्रथः। कद्वदः॥

पथिन् और अक्ष शब्द परे हों तौ (कु) को (का) आदेश होता है—कुत्सितः-पन्थाः=कापथः कुत्सितः=अक्षः=काक्षः॥

पुरुष शब्द उत्तरपद में हो तौ (कु) को 'का' आदेश विकल्प से होता है—कुपुरुषः, कापुरुषः॥

यदि उष्ण शब्द परे रहे तौ ईषदर्थवाचक (कु) को का और कव दोनों आदेश होते हैं—कु (ईषत्) उष्णम्=कोष्णम्, कवोष्णम्॥

क्विप् प्रत्ययान्त नह्, वृत्, वृष्, व्यध्, रुच्, सह् और तन् शब्द परे हों तौ पूर्वपद को दीर्घादेश होता है—उप-नह्=उपानत्। नि—वृत्=नीवृत्। प्र-वृष्=प्रावृट्। मर्म—व्यध्=मर्मावित्। नि—रुच्=नीरुक्। अति—सह्=अतीषट्। परि—तन्=परीतत्॥

(वल) प्रत्यय परे हो तौ संज्ञा में पूर्वपद को दीर्घ होता है—कृषीवलः। दन्तावलः॥

(वत्) प्रत्यय परेहो तौ अनेकाच् पूर्वपद को संज्ञा अर्थ में दीर्घ होजाता है—अमरावती। पुष्करावती। उदुम्बरावती॥

शर, वंश, धूम, अहि, कपि, मणि, मुनि, शुचि और हनु शब्दोंको भी संज्ञा अर्थ में (वत्) प्रत्यय परे हो तौ दीर्घ होजाता है—शरावती। वंशावती। इत्यादि

(वह) शब्द उत्तरपद में हो तौ इकारान्त पूर्वपद को दीर्घ होजाता है—ऋषीवहम्। कपीवहम्॥

घञ् प्रत्ययान्त शब्द उत्तरपदमें हो तौ पूर्वपदस्थ उपसर्ग को दीर्घ होता है यदि मनुष्य अभिधेय हो तौ नहीं होता—अपामार्गः। प्रासादः। प्राकारः॥ इत्यादि मनुष्य के अभिधान में—निषादः॥

अष्टन् शब्दको भी दीर्घादेश होता है यदि समस्त पदसे कोई संज्ञा बनती हो—अष्टावक्रः। अष्टापदः॥

विश्व शब्दका वसु और राट् शब्दों के साथ समास हो तौ पूर्वपदको दीर्घादेश होता है—विश्वावसुः। विश्वाराट्॥

यदि विश्व शब्द का नर शब्द के साथ समास हो

और उस समस्त पदसे कोई संज्ञा बनती हो तो पूर्वपद को दीर्घादेश होताहै—विश्वानरः ॥

यदि विश्व शब्दका मित्र शब्द के साथ समास हो और उस समस्त पदसे ऋषि अभिधेय हो तो भी पूर्वपद को दीर्घादेश होताहै—विश्वामित्रः । ऋषिकी संज्ञाहै ॥

इति समासप्रकरणम्.
समाप्तश्चायं संस्कृतप्रबोधस्य
द्वितीयोभागः ।

शुद्धाशुद्धम्

पृष्ठे	पंक्तौ	अशुद्धम्	शुद्धम्
१३	१५	ब्यति	व्येति
१४	१३	नीचेर्न	नीचैर्न
१७	२५	मध्यषि	मध्येषि
२०	१०	दुर्जनेः	दुर्जनैः
„	१२	मूढ़ ?	मूढ !
२१	४	निदेश	निर्देश
३३	१४	पङ्गः	पङ्गूः
„	२५	कद्रः	कद्रूः
३४	१३	समर्थ्य	सामर्थ्य
३५	५	पञ्जनदम्	पञ्चनदम्
„	२२	होता	होता है
३६	१	वृद्धि	व्यृद्धि
„	१७	निर	निर्
„	१८	निर्हिंसम्	निर्हिंमम्
४६	२०	सर्वश्वतः	सर्वश्वेतः